मूल्य : 20/-
घोषणा पत्र संख्या : 153/2016-17
वर्ष : ३
मार्च : २०१९, विक्रमी सम्वत् : २०७५
सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३११९, दयानन्दाब्द : १९५
अंक : ९

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

सत्य और ज्ञान से भरपूर आर्यसमाज नोएडा का मासिक मुखपत्र

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

"सा प्रथमा संस्कृतिविश्ववारा"

नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्।।

ईश्वर का व्यापक ज्ञानस्वरूप पूज्य और सहज स्वभाव जानकर हम उसकी उपासना करें तथा जीवन में सदा सत्य का आचरण करें।

'स्वामी दयानन्द जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव विशेषांक'

शहीद भगत सिंह
बलिदान : 23 मार्च

शहीद राजगुरु
बलिदान : 23 मार्च

शहीद सुखदेव
बलिदान : 23 मार्च

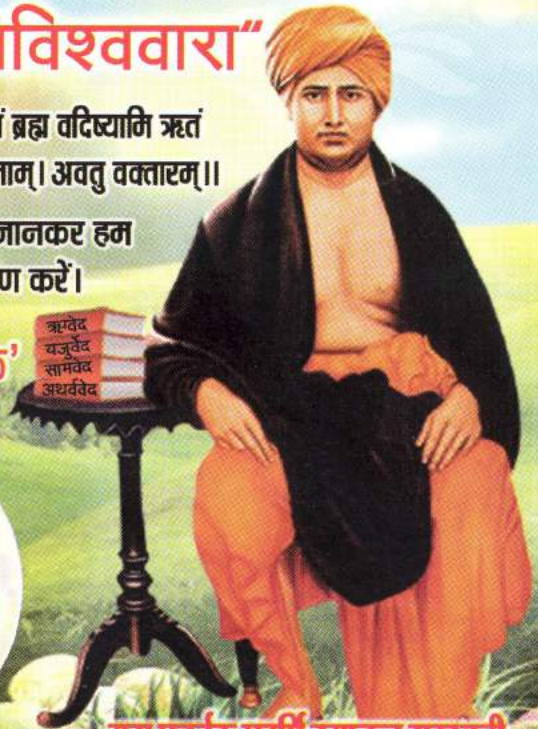

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती
1824-1883

आर्य राष्ट्र निर्माण 'विमर्श समारोह' की झलकियां

ओ३म्

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।।

विश्ववारा संस्कृति

मानवीय जीवन मूल्यों की संरक्षक पत्रिका

संरक्षक
श्री आनंद चौहान, श्री सुधीर सिंघल
श्रीमती गायत्री मीना 'प्रधान'

प्रबंध संपादक
आर्य कै. अशोक गुलाटी

संपादक
आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार

व्यवस्थापक
ओमकार शास्त्री

प्रकाशक और मुद्रक
स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. जयेन्द्र कुमार द्वारा वत्स ऑफसेट, मुद्दा हाऊस, सी-ब्लॉक, बारात घर, चौड़ा रघुनाथपुर, सेक्टर-22, नोएडा से मुद्रित एवं आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित किया।

Title Code : UPMUL-200652

घोषणा पत्र संख्या : 153/06.06/2016-17

मूल्य

एक प्रति	: 20/-	वार्षिक	: 250/-
पांच वर्ष	: 1100/-	आजीवन	: 2500/-

विदेश में वार्षिक शुल्क : 3100/-

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ
1.	संपादकीय : शहीदों को नमन	2
2.	आखिर क्यों हो रहा है...	3
3.	मूलशंकर से महर्षि दयानन्द	4-5
4.	राष्ट्रपितामह : महर्षि...	6-7
5.	आर्यसमाज एक वैश्विक...	8-9
6.	ऋषिबोध दिवस हमें बोध...	10
7.	योगः कर्मसु कौशलम्	11
8.	महापुरुषों को नमन...	12-13
9.	स्वामी दयानन्द की महानता	14-15
10.	ऋषि का स्वराज चिंतन	16-17
11.	समाचार-सूचनाएं	22
12.	सुस्वास्थ्य : मौसम बदलने के...	24

पाठकवृंद : कृपया स्वयं समाज एवं राष्ट्र के उत्थान के लिए 'विश्ववारा संस्कृति' के आजीवन सदस्य बनकर जीवन पथ को पुष्पित, प्रफुल्लित और प्रमुदित करें। आपका चित्र पत्रिका में प्रकाशित होगा। आपके बहुमूल्य सुझावों का हम स्वागत करते हैं।

लेखकवृंद से अनुरोध है कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित हो, रचना का लेखन स्पष्ट और सुपाठ्य हो। दो प्रतियां उस रचनाकार को भेज दी जाएगी, जिनकी रचना प्रकाशित हुई है।

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	:	5100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-2	:	3100 रुपये
कवर पृष्ठ नं.-3	:	2500 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	:	1000 रुपये
आधा पृष्ठ अंदर	:	600 रुपये

'विश्ववारा संस्कृति' में सभी पद अवैतनिक हैं। प्रकाशित विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र गौतमबुद्धनगर होगा।

संपादकीय कार्यालय

आर्य समाज, बी-69,
सेक्टर-33, नोएडा- 201301
गौतमबुद्धनगर, (उ.प्र.)
दूरभाष : 0120-2505731,
9871798221, 7011279734

Web : www.aryasamajnoida.org, E-mail : info.aryasamajnoida33@gmail.com

संपादकीय...

।।ओ३म्।।

शहीदों को शत्-शत् नमन

पुलवामा में जो हुआ उससे पूरा भारत देश आहत है। इस जघन्य काण्ड की निंदा भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व कर रहा है। धोखे से कुत्तों के हाथों से शेर शहीद हो गये। उन शहीदों को शत्-शत् नमन है। पिछले दो सालों में तीन सौ से ज्यादा जवान शहीद हो चुके हैं। इस सरकार के कार्यकाल में अनेकों बार LOC का उल्लंघन हो चुका है। पाकिस्तान जैसा भुखमरी का शिकार देश गीदड़ भभकियां देता रहता है। मैं राजनीतिक दलों की सराहना करता हूं कि सब इस संकट की घड़ी में एक साथ खड़े हैं। सभी वर्गों के लोग तिरंगे की खातिर अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिए तैयार दिखाई पड़ते हैं। जगह-जगह प्रदर्शन के माध्यम से लोग अपना आक्रोश प्रकट कर रहे हैं। हमला कायरतापूर्ण है, किंतु इसका जवाब देने के लिए जो वीरता चाहिए उसका आभाव हमारे नेताओं में स्पष्ट दिखाई पड़ता है। जबकि जमाखर्च में हमारे नेता ज्यादा जुटे दिखाई पड़ते हैं। उनके हावभाव से लगता है कि उनको देश की नहीं, चुनाव की ज्यादा चिंता है। देश की जनता कुत्तों से बदला लेना चाहती है। वेद में ऋषि उद्बोध करता है 'वयम राष्ट्र जागृयाम पुरोहिता'। हम राष्ट्र के जागरूक पुरोहित बने! अभी सारा देश जागा हुआ सा लगता है। मोमबत्ती गैंग सड़कों पर है, एसी में बैठकर मीडियाकर्मी जोरदार बहस कर रहे हैं। व्हाट्सअप का भूचाल आया हुआ है। नेता गरमागरम भाषण दे रहे हैं, लेकिन ये सब हमेशा की तरह कुछ दिन चलने वाला है। यदि आप सही अर्थों में राष्ट्र भक्त हैं तो इन 56 इंच सीने वालों को मजबूर कर दीजिए, पहले शहादत का बदला लें, फिर चुनाव होगा। अन्यथा किसी को एक वोट भी नहीं मिलेगा, तब शायद हमारे जवानों का बलिदान सार्थक होगा। 'अब न अहले वलवले है और न अरमानों की भीड़, एक मिट जाने की हसरत अब दिले विस्मिल में है।'

■ आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार

हमला कायरतापूर्ण है, किंतु इसका जवाब देने के लिए जो वीरता चाहिए उसका आभाव हमारे नेताओं में स्पष्ट दिखाई पड़ता है। जबकि जमाखर्च में हमारे नेता ज्यादा जुटे दिखाई पड़ते हैं। उनके हावभाव से लगता है कि उनकी देश की नहीं चुनाव की ज्यादा चिंता है। देश की जनता कुत्तों से बदला लेना चाहती है। वेद में ऋषि उद्बोध करता है 'वयम राष्ट्र जागृयाम पुरोहिता।' हम राष्ट्र के जागरूक पुरोहित बने! अभी सारा देश जागा हुआ सा लगता है। मोमबत्ती गैंग सड़कों पर है, एसी में बैठकर मीडियाकर्मी जोरदार बहस कर रहे हैं। व्हाट्सअप का भूचाल आया हुआ है। नेता गरमागरम भाषण दे रहे है, लेकिन ये सब हमेशा की तरह कुछ दिन चलने वाला है। यदि आप सही अर्थों में राष्ट्र भक्त हैं तो इन 56 इंच सीने वालों को मजबूर कर दीजिए, पहले शहादत का बदला लें, फिर चुनाव होगा।

स्वामी जी के जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा द्वारा समस्त जनों को महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव की हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं!!

- प्रबंध संपादक

आखिर क्यों हो रहा है देश में आतंक

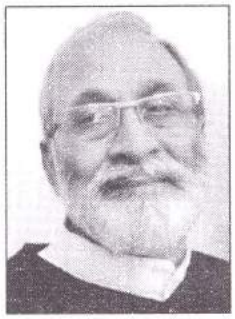

आर्य कै. अशोक गुलाटी
प्रबंध संपादक

आखिर विचार करना ही पड़ेगा कि हमारे देश में निरंतर आतंकी हमले क्यूं होते जा रहे हैं, जिससे देश में अशांति फैल रही है। हमारे देश के सैनिक सीमा पर शहीद हो रहे हैं। देश की स्थिति गंभीर होती जा रही है। हमारे देश के प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है कि वह देश में बिगड़ते हालात पर सोचे और देश की स्थिति सुधारने की बात करे। हमारे देश की राजनीति इतनी गंदी हो चुकी है कि लोग सिर्फ सत्ता के विषय में सोचते हैं, अपने विषय में सोचते हैं और अपनी कुर्सी की चिंता करते हैं। देश के नेताओं को वोट की राजनीति के अलावा कुछ भी सोचने की फुर्सत ही नहीं है। इसलिए देश के प्रत्येक नागरिक को देश के हालातों पर विचार कर समस्या का समाधान करना पड़ेगा। यदि हम हाथ पर हाथ रखकर सरकार के भरोसे बैठे रहे तो पता भी नहीं चलेगा हम कहां है।

भारत के प्रत्येक नागरिक को, सरकार को, सामाजिक संगठनों को मिलकर काम करना पड़ेगा तभी देश के हालात सुधरेंगे। तभी देश में खुशी और आनंद होगा। अभी-अभी देश में आतंकी हमला हुआ, जिसमें लगभग 40 जवान शहीद हुए और अभी निरंतर हो रहे हैं। ये विचारणीय है कि कब तक हमारे जवान शहीद होते रहेंगे और शहीद के बच्चे, पत्नी इस त्रासदी को फेलते रहेंगे। जो जवान हमारी सरहदों की रक्षा करते हैं, हमारा जीवन सुरक्षित रखते हैं, क्या हमारा कोई कर्तव्य नहीं कि उनको भी हम सुरक्षित रखें? कोई ऐसी तरकीब नहीं कि हम सभी ऐसी दुर्घटनाएं न होने दें। इस्राइल जैसा छोटा देश इस्लामिक आतंकवाद से सभी ओर से घिरा हुआ होने पर भी अपने देश के नागरिकों व सैनिकों की रक्षा करने में समर्थ है। उसने ऐसी तकनीक ईजाद की है, वह ऐसे कार्य करता है कि दुश्मन उसकी ओर आंख उठा भी नहीं सकता। क्या हमने इस ओर ध्यान देने का प्रयास किया है? हमारे शीर्ष नेतागण को देश के रखवालों के प्रति गंभीर होना होगा। उनकी रक्षा का सम्मान देकर उन्हें सुरक्षित करना ही होगा व उनके परिवार को विश्वास दिलाना होगा कि हमें अपने वीर सैनिकों की रक्षा की चिंता है, जो देश की रक्षा के लिए खड़े है।

अपनी सीमाओं को इस्राइल की तरह सुरक्षित करना होगा। सैनिकों को हर प्रकार की सुरक्षा दिलाने की आवश्यकता है। हमारा भी कर्तव्य बनता है कि हम जहां कहीं भी हैं, जो भी कार्य कर रहे हैं उसके प्रति निष्ठा पूर्वक कार्य करते हुए देश के प्रति समय आने पर पूरी ईमानदारी से न्योछावर करने को तत्पर रहें।

नवयुवकों को सरकार की ओर से कम से कम दो वर्ष की सैनिक ट्रेनिंग देने का प्रावधान होना चाहिए ताकि आवश्यकता पड़ने पर वह कुछ कार्य कर सकें। सभी में देश भावना जागृत करने की आवश्यकता है। देखा गया है कि कुछ स्थानों पर देश विरोधी नारे लगाए गए व देश को तोड़ने के कुत्सित प्रयास किये गये, जिनसे सरकार को सख्ती से निपटना चाहिए। ऐसा सख्त कानून बनाया जाए ताकि कोई और ऐसी हरकत न करे। हमारे कानून इतने लचीले हैं कि भ्रष्टाचार के, देशद्रोह के व अन्य प्रकार के केस में कोई फैसला ही नहीं आता व ऐसे लोग जमानत पर छूट जाते हैं। जिससे दूसरों को गलत कार्य करने के लिए हौसला बढ़ जाता है। हमारी अदालतों द्वारा एक देश विरोधी कार्य करने वाले को फांसी रोकने के लिए राजनीति की जाती है, यह कैसी विडम्बना है? अब सख्त कानून की आवश्यकता है। अलगाववादी खुले घूमते हैं, देश विरुद्ध जहर उगलते हैं, उन पर कुछ कार्यवाही नहीं होती। देश की कोई नहीं सोचता बस अपनी राजनीति की रोटियां सेंकते हैं। महत्वाकांक्षा के चलते अपनी गद्दी बचाने की होड़ लगी रहती है।

चांद उग्र हो तो गगन क्या करे, फूल आग हो तो चमन क्या करे। मुझसे मेरे तिरंगे ने रोकर कहा-कुर्सीयां भ्रष्ट हों तो वतन क्या करे॥

हम प्रत्येक जागरूक नागरिक की तरह भूमिका निभाकर एक संयुक्त राष्ट्र बनाने का प्रयास करें, संगठित रहें व किसी भी प्रकार के उग्रवाद, आतंकवाद को समाप्त करने के लिए कर्बद्ध होकर सरकार को सहायता दें। आज संकल्प करें कि तुच्छ राजनीति से ऊपर उठकर राष्ट्र निर्माण में एक नई भूमिका निभाएंगे, अच्छे लोगों को शीर्ष पदों पर लाकर देश भक्ति की भावना से कार्य करें और नया भारत बनाएं। ओ३म्!!

जय हिंद, भारत माता की जय!! OO

मूलशंकर से महर्षि दयानन्द

प्रबोध भास्कर का उदय

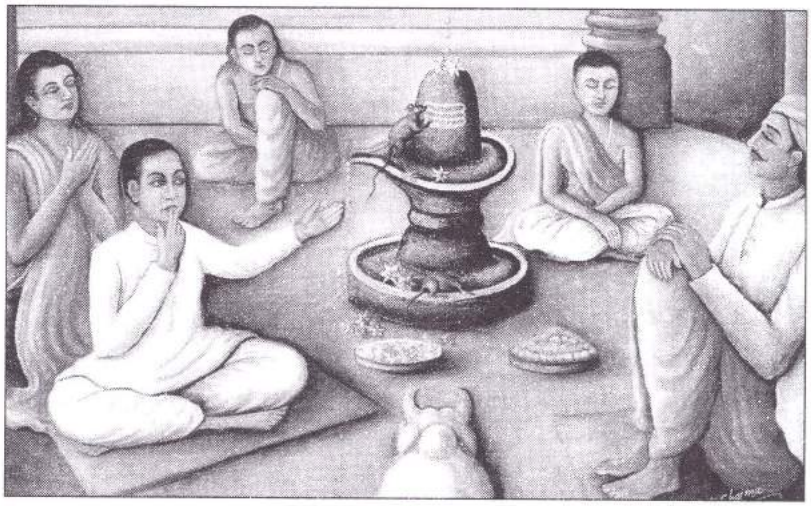

: मूलशंकर जी के पिता पक्के शैव थे। मूल जी पर भी वैसे ही संस्कार डालने हेतु वे हर सम्भव प्रयत्न करते थे। पिताश्री की प्रेरणा से मूल जी ने शिवरात्रि में पूरी रात जागकर, निराहार रहकर व्रत रखने का निश्चय किया। फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी सं. 1894 वि. की इस रात्रि में ऐसी अद्भुत घटना घटी जिसने न केवल बालक मूलशंकर की मानसिक दशा में ही परिवर्तन किया अपितु वह उनके भावी कार्यक्रम की रूपरेखा को भी सुनिश्चित कर सकी। शिवालय में समस्त भक्तगण पूर्ण श्रद्धा के साथ पूजा-अर्चना में तल्लीन थे। सारी रात जागरण करना था। परंतु रात्रि के तीसरे पहर तक बालक मूलशंकर को छोड़कर सभी भक्तगण यहां तक कि पुजारी तथा करसन जी भी निद्रा देवी के पाश में आबद्ध हो गये। तभी मूल जी ने देखा कि चूहे आकर शिवलिंग पर उछल कूद मचाने लगे। दयानन्द के चिदाकाश में संचरित विचार तरंगे और प्रश्न के सितारे सर्वशक्तिमान कहे जाने वाले त्रिशूलधारी शिवजी पर उछलकूद करते क्षुद्र प्राणियों को देखकर चमक उठे। पिताश्री को जगाकर समाधान चाहा पर संतुष्ट न हो सके, अतएव व्रत तोड़कर घर चले आए। यह घटना मूलशंकर के जीवन को असाधारण मोड़ देने में सफल हुई। जड़पूजा की निस्सारता का निश्चय हुआ व सच्चे शिव के दर्शन का संकल्प जागृत हुआ।

वैराग्य का उदय :

जब मूल जी की आयु सोलह वर्ष की थी तब अचानक एक दिन मानव जीवन की क्षण भंगुरता, संसार की नश्वरता और मृत्यु की शाश्वत विभीषिका अचानक उनके समक्ष उपस्थित हो गयी। हैजा के कारण उनकी छोटी बहिन की मृत्यु हो गयी। उन्हीं के शब्दों में- 'तब तक मेरी सोलह वर्ष की अवस्था हुई थी। पीछे मुझसे छोटी चौदह वर्ष की जो बहिन थी उसको हैजा हुआ, एक रात्रि में जिस समय नाच हो रहा था। नौकर ने खबर दी कि उसको हैजा हुआ है। तब सब जने वहां तत्काल आए और वैद्य आदि बुलाए। औषधि भी की तथापि चार घंटे में उस बहन का शरीर छूट गया। सब लोग रोने लगे परंतु मेरे हृदय में ऐसा धक्का लगा और भय हुआ कि ऐसे ही मैं भी मर जाऊंगा। सोच विचार में पड़ गया। जितने जीव संसार में हैं, उनमें से एक भी न बचेगा। इससे कुछ ऐसा उपाय करना चाहिए जिससे यह दुःख छूटे और मुक्ति हो। अर्थात् इसी समय से मेरे चित्त में वैराग्य की जड़ पड़ गयी।'

अद्भुत् क्षमादान :

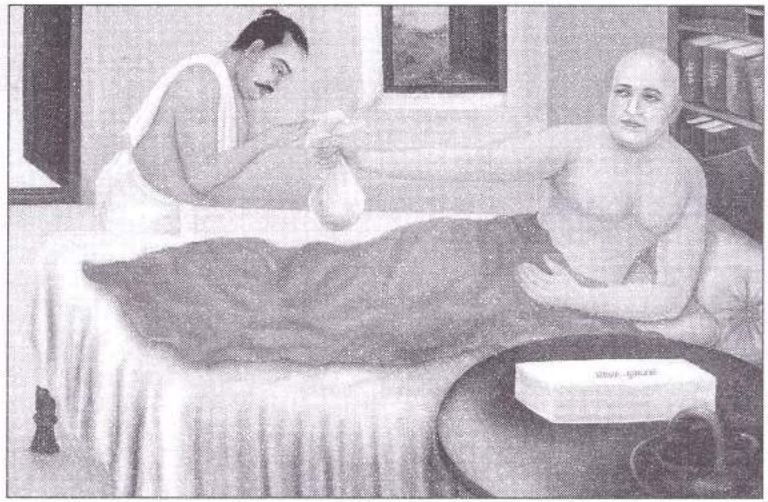

महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन में असत्य से समझौता किया हो ऐसा एक भी उदाहरण नहीं मिलता। उनका हृदय मानव मात्र के लिए प्रेम व स्नेह से सराबोर था। सत्य कथन वे अपना धर्म समझते थे। पर उनके इस सत्य कथन से, अनेक क्षुद्राशय, साम्प्रदायिक मनोवृत्ति के लोग नाराज रहते थे। जोधपुर में जब स्वामी जी ने महाराणा को वेश्या-वृत्ति के लिए फटकारा तो नन्हीं भगतन उनकी जानी दुश्मन बन गई। श्री महाराज के प्रेरक प्रवचनों से जिस प्रकार नूतन प्रकाश की किरणें फैल रहीं थी वह साम्प्रदायिक मनोवृत्ति के लोगों को फूटी आंख भी नहीं सुहा रही थी। इन सब विरोधियों ने मिलकर स्वामी जी को विष देने की योजना बनाई। योजनानुसार, आश्विन कृष्णा चतुर्दशी सं. 1940 तदनुसार 29 सित. 1883 को रात्रि बेला में षड्यंत्रकारियों ने स्वामी जी के पाचक धौड़ मिश्र (जगन्नाथ) के द्वारा उन्हें दूध के साथ विष दिलवा दिया। रात्रि में ही श्री महाराज को अत्यन्त व्याकुलता हुई, तीन बार वमन भी किया। वह समझ गये कि उन्हें विष दिया गया है। विषदाता रसोइये का अनुमान होने पर भी उसे कोई दण्ड न दिलाकर उसे यही कहा- 'मेरे इस समय मरने से मेरा कार्य सर्वथा अधूरा रह गया, तुम नहीं जानते इससे लोकहित की कितनी भारी हानि हुई है। अच्छा विधाता की यही इच्छा है। यह कहकर रसोइये को पांच सौ रुपये देकर वहां से नेपाल भाग जाने को कहा। दयानन्द अद्भुत है तेरी क्षमा! विषदाता को भी प्राणदान!

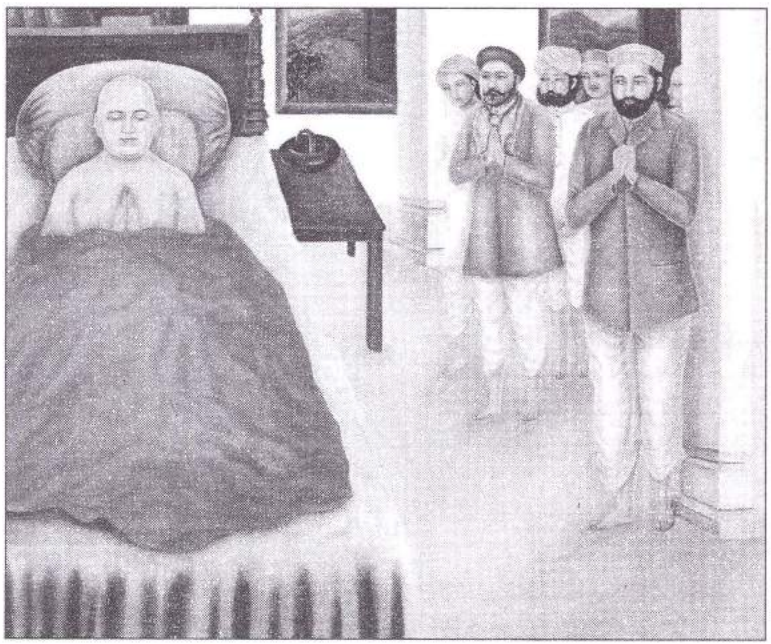

ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो :

विधाता के अमिट विधान के अन्तर्गत अंततः वह घड़ी भी आ पहुंची जब सत्य व ज्ञान का सूर्य इस नश्वर संसार से विदा लेने वाला था। श्री महाराज के शरीर में नस-नस और रोम-रोम में रोग का विषैला कीड़ा घुसकर कुलबुलाहट कर रहा था, शारीरिक कष्ट का पारावार न था, तन पंजर को महाव्याधि की ज्वाला-जलाए चली जाती थी, पर वे प्रशांत चित्त थे। सभी आगंतुक भक्तजन अधीर थे पर वे धैर्य के अद्वितीय धनी थे। अपना सम्पूर्ण जीवन ईश्वर की आज्ञा पालन में समर्पित कर, अनेकानेक कष्ट उठाकर भी विश्व को सत्य का प्रकाश अर्पित कर, अनेक बार स्वयं विषपान कर संसार को अमृत प्रदान करने वाले महर्षिवर, इस अंतिम बेला में भी असह्य वेदना व अन्तर्दाह में भी आनन्दमग्न थे। कार्तिक मास की अमावस्या का दिन, सायंकाल का समय, श्री महाराज ने सारे दरवाजे और रोशनदान खुलवा दिए। वेदमंत्रों का पाठ आरम्भ कर दिया। आनंदमग्न होकर समाधिस्थ हो गये। पुनः आंखें खोलकर ओ३म् का उच्चारण कर कहा- 'हे दयामय सर्वशक्तिमान ईश्वर! तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो। अद्भुत तेरी लीला है।' यह कह करवट लेकर श्वास बाहर निकाल दिया। उन्नीसवीं शताब्दी के महर्षि, आर्षधर्म द्रष्टा, अप्रतिम धर्माचार्य और धर्म संशोधक, महान् समाज संस्कारक, योगिराज ने सारे जीवन अनेकानेक बुझे दीपकों को प्रज्ज्वलित किया, उनकी मृत्यु भी पं. गुरुदत्त जैसे दार्शनिक विद्वान् को आस्तिक बनाने में सफल रही।

राष्ट्रपितामह : महर्षि दयानन्द

स्व. आचार्य हरिदेव आर्य, सूर्य निकेतन, दिल्ली

जब इस युग के महानतम् सुधारक, सुक्रांतकारी, वेद शास्त्रों के प्रकांड पंडित, अत्यंत दूरदर्शी, प्रभु के अनन्य उपासक, आर्य समाज के प्रवर्तक, युग-प्रवर्तक, जगदोद्धारक परमपूज्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज का प्रदुर्भाव हुआ, उस समय देश में बड़ा भारी विप्लव हो रहा था। राष्ट्रीय शक्ति छिन्न-भिन्न थी। मुगल राज्य का सितारा डूब चुका था।

राजपुताने की वीरता निराश होकर अपने ही मरुस्थलों एवं पहाड़ियों में सुप्तावस्था में पड़ी थी। पेशवा और सिंधिया-शक्ति की स्वतंत्रता का तारा डूब-सा चुका था। नेपाली सैनिक-शक्ति युद्ध-संग्राम को उत्तेजित करने के बाद अपनी पर्वत मालाओं की ओर लौट रही थी।

उस समय देश में अशांति तथा भय का आतंक छाया हुआ था। अवस्था अत्यंत शोचनीय थी। हमारी जाति में आत्म-सम्मानता का बिल्कुल ही अभाव था। अधार्मिक भाव पनप रहे थे। भारत भूमि अनेक कुरीतियों से कंटकाकीर्ण हो चुकी थी। सैकड़ों चिताएं, भारतीय देवियों से सजीव देहों को बलात् धधका रही थी। अधर्म तथा अज्ञानता की काली निशा में भारतीय बेसुध पड़े सो रहे थे।

जन्ममात्र से ब्राह्मण (कर्म से चाहे चाण्डाल) कहलाने वाले धर्म के ठेकेदार बने हुए थे। साधारण सी भूलों पर अथवा संदेहमात्र से ही लोग जाति से निकाल दिये जाते थे। ज्योतिष की लीला, मृतक-श्राद्ध, पत्थर या मूर्तिपूजादि के ब्रह्मबल, छत्रबल आदि को जड़वत् बना दिया था।

सत्य-ज्ञान का भानु अविद्या रूपी मेघों से ढप गया था और सर्वत्र अंधकार ही अंधकार था। आर्य जाति का बहुत बड़ा भाग धर्म ग्रंथों को पढ़ना तो दूर रहा, इनके सुनने तक का अधिकारी नहीं माना जाता था। नारी जाति की दीन अवस्था थी। विधर्मियों के कु:प्रचार से वातावरण दूषित तथा विषैला हो चुका था। हमारी जाति के लाल धड़ाधड़ ईसाई और मुसलमान बनकर देश-धर्म के शत्रु बनते जा रहे थे। निराकार भगवान की उपासना के स्थान पर भूत, प्रेत, पत्थर और पिशाच पूजा, पीर-पैगम्बर औलिया तथा कब्रपरस्ती, धागा, जंत्र-मंत्र, झाड़-फूंक तथा देवी-देवताओं की भरमार और इनके सामने माथा झुकाना मात्र ही धर्म का मुख्य अंग बन चुका था।

ऐसी दुर्दशा के समय महर्षि जी का जन्म हुआ। उन्होंने अखंड ब्रह्मचर्य का पालन किया, वैदिक-आर्ष ग्रंथों का स्वाध्याय कर अपने मन-बुद्धि को निर्मल कर महाविद्वान बन नाना प्रकार के कष्टों को झेलते हुए, विद्या का प्रकाश करने हित वे वीतराग संन्यासी बने और विश्व को वे दे गये जो अकथनीय तथा अवर्णनीय है, जिसका ऋण भार सहस्रों वर्षों में भी हम उतार न सकेंगे।

आज जो राष्ट्र ने करवट बदली है, देश में जागृति के जो चिन्ह दिखाई दे रहे हैं, देश की स्वतंत्रता, समाज-सुधार, शिक्षा का प्रसार, वैदिक प्रचार, ब्रह्मचर्य का प्रसार, चरित्र-निर्माण, अछूतोद्धार, स्त्री शिक्षा आदि-आदि पुनीत आंदोलन दृष्टिगोचर हो रहे हैं। ये सब जगद्गुरु महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज की ही महती कृपा का फल है। इतने जादू भरे प्रभाव को समझने के लिए महर्षि जी के महान जीवन चरित्र का तथा प्रकाश-स्तम्भ रूपी उनके अमूल्य ग्रंथों का श्रद्धापूर्वक स्वाध्यायकरना आवश्यक है। इनका वर्णन इस लघु पुस्तिका में समुद्र के सामने एक बिन्दु मात्र भी नहीं है। परम पूज्य महर्षि अपने महान कार्यों तथा त्याग और तपस्या के कारण ही सदा-सदा के लिए अमर बन गये। संसार में उनकी समानता करने वाला कोई नहीं है।

विधर्मियों के कु:प्रचार से वातावरण दूषित तथा विषैला हो चुका था। हमारी जाति के लाल धड़ाधड़ ईसाई और मुसलमान बनकर देश-धर्म के शत्रु बनते जा रहे थे। निराकार भगवान की उपासना के स्थान पर भूत, प्रेत, पत्थर और पिशाच पूजा, पीर-पैगम्बर औलिया तथा कब्रपरस्ती, धागा, जंत्र-मंत्र, झाड़-फूंक तथा देवी-देवताओं की भरमार और इनके सामने माथा झुकाना मात्र ही धर्म का मुख्य अंग बन चुका था। ऐसी दुर्दशा के समय महर्षि जी का जन्म हुआ। उन्होंने अखंड ब्रह्मचर्य का पालन किया, वैदिक-आर्ष ग्रंथों का स्वाध्याय कर अपने मन-बुद्धि को निर्मल कर महाविद्वान बन नाना प्रकार के कष्टों को झेलते हुए, विद्या का प्रकाश करने हित वे वीतराग संन्यासी बने और विश्व को वे दे गये जो अकथनीय तथा अवर्णनीय है, जिसका ऋण भार सहस्रों वर्षों में भी हम उतार न सकेंगे।

जिस युग में महर्षि जी हुए, उसमें कई वर्ष पूर्व से आज तक ऐसा एक ही महापुरुष पैदा हुआ जो विदेशी भाषा नहीं जानता था, जिसने स्वदेश से बाहर एक पग भी नहीं रखा था, जो पूर्ण स्वदेशी था अर्थात् विचारों में, आचारों में, भाषा, वेष-भूषादि में, स्वदेशी था परंतु वीतराग संन्यासी होने और परम विद्वान होने के कारण सबका भक्ति-भाजन बना, जिसका देशी-विदेशी सभी मान करते थे, ऊंचे से ऊंचे विदेशी पदाधिकारी और स्वदेशी राजे-महाराजे जिसका अति सम्मान किया करते थे- वे महापुरुष महर्षि दयानन्द थे। स्वामी जी महाराज पहले ही व्यक्ति थे जो अपने देश में पूर्ण स्वदेशी होते हुए भी पश्चिमी देशों के बड़े-बड़े नेताओं तथा जन-जन के गुरु कहलाये। आपको अनेक पश्चिमी विद्वानों ने अपना महान् गुरु, आचार्य और धर्म पिता माना है।

जिस युग में महर्षि जी हुए, उसमें कई वर्ष पूर्व से आज तक ऐसा एक ही महापुरुष पैदा हुआ जो विदेशी भाषा नहीं जानता था, जिसने स्वदेश से बाहर एक पग भी नहीं रखा था, जो पूर्ण स्वदेशी था अर्थात् विचारों में, आचरों में, भाषा, वेष-भूषादि में, स्वदेशी था परंतु वीतराग संन्यासी होने और परम विद्वान होने के कारण सबका भक्ति-भाजन बना, जिसका देशी-विदेशी सभी मान करते थे, ऊंचे से ऊंचे विदेशी पदाधिकारी और स्वदेशी राजे-महाराजे जिसका अति सम्मान किया करते थे- वे महापुरुष महर्षि दयानन्द थे। स्वामी जी महाराज पहले ही व्यक्ति थे जो अपने देश में पूर्ण स्वदेशी होते हुए भी पश्चिमी देशों के बड़े-बड़े नेताओं तता जन-जन के गुरु कहलाये। आपको अनेक पश्चिमी विद्वानों ने अपना महान् गुरु, आचार्य और धर्म पिता माना है।

स्वामी जी का जन्म वर्तमान सौराष्ट्र के मौरवी राज्य में टंकारा नामक नगर में 1881 विक्रमी तद्नुसार सन् 1824 ई. में एक उच्च ब्राह्मण कुल में पं. कर्षण जी के घर हुआ। पूज्य माता का नाम यशोदा बाई था। पिता ने अपने प्यारे पुत्र का नाम मूल शंकर रखा। मूल जी के पिता बड़े धर्मनिष्ठ और कर्तव्य पारायण व्यक्ति थे। वे शिव के बड़े उपासक थे और चाहते थे कि उनका मूल भी वैसा ही बने। मूल जी की शिक्षा का प्रबंध बाल्यकाल में घर पर ही किया गया था। यजुर्वेद कंठस्थ करने के अतिरिक्त आपने कई अन्य विषयों का भी अध्ययन किया था।

आपके पिता के पास पुष्कल भूमि थी एवं वे मौरवी राज्य के एक उच्चाधिकारी थे। जब मूल जी 14 वर्ष के थे तो इनके पिता ने शिवरात्रि के दिन उनको शिव का व्रत रखने का आदेश दिया। आज्ञाकारी बालक मूल जी ने उसे श्रद्धा सहित स्वीकार कर लिया और रात्रि को अपने पिताजी के साथ शिवालय में रात्रि जागरण एवं शिव-पूजन को गये। कुछ रात्रि व्यतीत होने पर उनके पिताजी तथा अन्य भक्तगण सो गये परंतु मूलजी की आंखों में नींद कहां? उनको तो साक्षात् शिव के दर्शन करने की अभिलाषा थी। इसी बीच में एक चूहा मंदिर के बिल में से निकला और शिव-पिण्डी पर भक्तों द्वारा चढ़ाया पूजोपहार बड़े आनंद से खाने लगा और उस पर उछल-कूदकर मल-मूत्र द्वारा अपवित्र भी करने लगा।

शिव दर्शन की लालसा से पत्थर के लिंग के सामने व्रतोपवास किये मूर्तिवत् दृढ़, स्थिर, शांत बैठे अबोध भक्त मूलजी के शरीर में बिजली सी दौड़ गई। उनके अंत:करण में नाना प्रकार के विचार तरंगे उठने लगीं। ओह! क्या यही वे भगवान शिवजी हैं जो दैत्यों का संहार करने वाले और भक्तों को वर प्रदान करने वाले हैं। अहो? इसके सिर पर तो ये अपावन प्राणी चूहे दौड़ लगाकर और इसे अपवित्र कर इसके चढ़ावे को बड़ी निभर्यता से खा रहे हैं। इसमें तो इन तुच्छ जीवों को भगाने का भी बल नहीं। यह महादेव कैसा? जो अपनी रक्षा नहीं कर सकता वो हमारी रक्षा क्या करेगा? नहीं, यह सच्चाशिव नहीं हो सकता। पिता द्वारा बताने पर कि इस कलियुग में उस शिव का साक्षात् दर्शन नहीं होता। इसलिए पाषाणादि की मूर्ति बनाकर उसमें महादेव की भावना रखकर पूजा की जाती है, मूर्ति पूजा से मूल जी की आस्था उठ गई और उन्होंने सच्चे शिव का साक्षात् करने का दृढ़ संकल्प किया।

उन्होंने घर पर जाकर व्रतोपवास तोड़ दिया। शिवरात्रि की घटना से सच्चे शिव की खोज में भटकती अबोध भक्त मूल जी की आत्मा जाग उठी। शिव जी तो न मिले, हां! उसका बोध मिल गया। इसी कारण ही तो यह रात्रि बोध-रात्रि हुई। इस घटना के दो बाद प्यारी भगिनी का तथा पांचवे वर्ष में उनसे अति प्रेम रखने वाले बड़े धर्मात्मा विद्वान चाचाजी की विशूचिका से मृत्यु हो गई। महर्षि जी के शब्दों में उस समय मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं भी चाचा जी के सदृश एक दिन मरने वाला हूं। उनकी मृत्यु होने से अत्यंत वैराग्य उत्पन्न हुआ कि संसार में कुछ भी स्थिर नहीं।

(शेष अगले अंक में) OO

आर्यसमाज एक वैश्विक धार्मिक सामाजिक संस्था

मनमोहन कुमार आर्य
देहरादून, उत्तराखंड

आर्य समाज की स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने की थी। महर्षि दयानन्द महाभारत के बाद वेदों के प्रथम शीर्षस्थ ऐसे विद्वान थे जिनकों वेदों के सत्य अर्थ करने की योग्यता प्राप्त थी। महाभारत के पश्चात विगत 5000 वर्षों में महर्षि दयानन्द जैसा दूसरा ईश्वरभक्त, वेदों का विद्वान, प्रचारक, भाष्यकार, समाज सुधारक, समाधि सिद्ध योगी, देश का हितैषी, रक्षक, अन्धविश्वास व समस्त कुरीतियों का उन्मूलक, विश्व के प्राणिमात्र से सच्चा प्यार करने वाला व सबका हितैषी विद्वान मनुष्य उत्पन्न नहीं हुआ। उन्होंने आर्य समाज की स्थापना अनेक बुद्धिमान समाज के हितैषी प्रमुख अग्रणीय बंधुओं के परामर्श देने पर की जिससे उनके समय में व उनके बाद भी वेदों की रक्षा, प्रचार, अंधविश्वास व कुरीति उन्मूलन, शिक्षा का प्रचार-प्रसार के साथ देश व समाज के हित के कार्य तब तक चलते रहें जब तक कि लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाये।

मुम्बई में 10 अप्रैल, 1875 को स्थापना के बाद आर्यसमाज के नियम व उद्देश्यों को अन्तिम रूप दिया गया। इन उद्देश्य व नियमों की कुल संख्या 10 है। पहला नियम- सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है। दूसरा- ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है। तीसरा- वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। चैथा- सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। पांचवा- सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य का विचार करके करने चाहिए। छठा- संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। सातवां- सब से प्रीतिपूर्वक धर्मानुसर यथायोग्य वर्तना चाहिये।

आठवा- अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये। नौवा- प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिये, किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये। दसवां- सब मुनष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहें। इन 10 नियमों में से तीसरे नियम में वेद को सब सत्य विद्याओं का पुस्तक कहा गया है। महर्षि दयानन्द की मान्यता थी कि वेद ईश्वर ज्ञान है। यह ज्ञान सृष्टि की आदि में अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को सृष्टिकर्त्ता ईश्वर ने क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के रूप में उनके अंतःकरणों अर्थात् आत्माओं में स्थापित किया था। वेदों का यह ज्ञान बुद्धि, तर्क, युक्ति

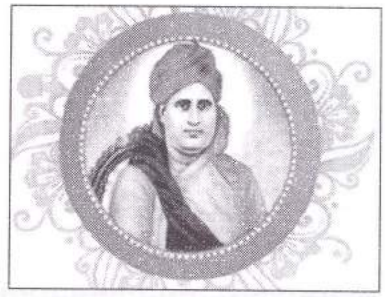

महर्षि दयानन्द ने कुछ वर्षों तक गहन व गंभीर सोच विचार कर अज्ञान, अंधविश्वास व कुरीतियों को मिटाने की योजना बनाई और इस बीच उपदेशों व प्रवचनों से प्रचार भी करते रहे। इस बीच जो प्रमुख घटना घटी वह काशी में 16 नवम्बर, 1869 को महर्षि दयानन्द का वहां के 30 प्रमुख विद्वान पंडितों से मूर्तिपूजा पर शास्त्रार्थ का होना था जिसमें महर्षि दयानन्द विजित रहे। मूर्तिपूजा का प्रावधान वेदों से सिद्ध न किया जा सका। इससे अवतारवाद व मूर्तिपूजा का मिथ्यात्व सिद्ध हुआ। महर्षि दयानन्द का वेदों का प्रचार देश भर के भ्रमण व स्थान-स्थान पर उपदेशों, शंका समाधान, वार्तालाप व शास्त्रार्थ के द्वारा जारी था। ऐसा होते-होते सन् 1874 का समय आ गया जब काशी में ही एक प्रवचन को सुनकर राजा जयकृष्ण दास गदगद हो गये और प्रवचन के बाद उन्होंने स्वामीजी को निवेदन किया कि महाराज आपके उपदेशामृत से जो ज्ञान गंगा प्रवाहित होती है उसका लाभ आपके प्रवचन में भाग लेने वाले कुछ ही लोगों को मिलता है। कुछ समय बाद यह लोग भी उपदेश का अधिकांश भाग विस्मृत कर देते हैं।

और सृष्टिक्रम के अनुकूल होने से सर्वथा ईश्वर से उत्पन्न इस कारण सिद्ध होता है कि सृष्टि के आदि में व बाद में भी मनुष्यों द्वारा इसका सृजन नहीं किया जा सकता था अर्थात् वेद अपौरूषेय हैं जिसकी रचना मनुष्यों द्वारा नहीं हो सकती ठीक वैसे ही जैसे कि मनुष्य सूर्य, चन्द्र, पृथिवी आदि को नहीं बना सकते।

महाभारत काल तक वेदों का यह ज्ञान संसार के सभी लोगों का धर्म, संस्कृति व सभ्यता के रूप में प्रचलित व प्रतिष्ठित रहा है। महाभारत के बाद संसार में अज्ञान छा गया जिससे सर्वत्र अंधविश्वास व कुरीतियों की उत्पत्ति व प्रचलन होने लगा। ऐसा वेदों के विद्वानों की कमी व विलुप्ता आदि के कारण व लोगों में आलस्य, स्वार्थ, प्रमाद, लोभ, मोह, काम, क्रोध आदि दुगुर्णों के बढ़ने से हुआ। भारत सहित संसार के सभी देश अज्ञान, अंधविश्वास व कुरीतियों से आच्छादित हो गये। समय के साथ इसका विस्तार होता रहा और आज भी संसार पूरी तरह अज्ञान, अंधविश्वास और कुरीतियों से मुक्त नहीं हुआ है। यदि दृष्टिपात करें तो महाभारत काल के बाद अज्ञान के कारण यज्ञों में पशु हिंसा, सर्वव्यापक ईश्वर की वेद व योग विधि से उपासना-पूजा के स्थान पर अवतारवाद, मूर्ति व पाषाण देवी देवताओं की पूजा, मृतकों का श्राद्ध, मिथ्या फलित ज्योतिष का प्रचार, बाल विवाह, मनुष्यों द्वारा मल-मूत्र आदि की सफाई का काम, जन्मना जाति व्यवस्था, गुणकर्मस्वभाव पर आधारित वर्ण व्यवस्था का लोप, सामाजिक असमानता व विषमता, ज्ञान व विज्ञान का पराभव, शिक्षा का पराभव, स्त्री व शूद्रों को वेद व अन्य प्रकार के ज्ञानार्जन से वंचित करना, दहेज प्रथा, बौद्ध, जैन, पौराणिक, पारसी, ईसाई, इस्लाम आदि मतों का प्रादुर्भाव आदि अनेक कार्य थे। इनमें से कुछ मत दूसरे मत के अनुयायियों का येनकेनप्रकारेन धर्मान्तरण कर अपनी संख्या व शक्ति बढ़ाने लगे और ऐसा करते समय उन्होंने सभी नैतिक मूल्यों की तिलांजलि भी दे दी। इन अज्ञान व अंधविश्वासों आदि के प्रभाव से भारत पहले यवनों का और इसके बाद अंग्रेजों का गुलाम हो गया। अज्ञानान्धकार व अंधविश्वासों की जकड़ व पकड़ बढ़ रही थी कि ऐसे समय 1863 में महर्षि दयानन्द ने मथुरा में दंडी गुरु प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द की कुटिया से अपना अध्ययन समाप्त कर गुरु की प्रेरणा से देश व दुनिया से अज्ञान व अंधकार दूर मिटाकर वेद के ज्ञान का प्रकाश फैलाने के लिए देश की क्षितिज पर पदार्पण किया।

महर्षि दयानन्द ने कुछ वर्षों तक गहन व गंभीर सोच विचार कर अज्ञान, अंधविश्वास व कुरीतियों को मिटाने की योजना बनाई और इस बीच उपदेशों व प्रवचनों से प्रचार भी करते रहे। इस बीच जो प्रमुख घटना घटी वह काशी में 16 नवम्बर, 1869 को महर्षि दयानन्द का वहां के 30 प्रमुख विद्वान पंडितों से मूर्तिपूजा पर शास्त्रार्थ का होना था जिसमें महर्षि दयानन्द विजित रहे। मूर्तिपूजा का प्रावधान वेदों से सिद्ध न किया जा सका।

इससे अवतारवाद व मूर्तिपूजा का मिथ्यात्व सिद्ध हुआ। महर्षि दयानन्द का वेदों का प्रचार देश भर के भ्रमण व स्थान-स्थान पर उपदेशों, शंका समाधान, वार्तालाप व शास्त्रार्थ के द्वारा जारी था। ऐसा होते-होते सन् 1874 का समय आ गया जब काशी में ही एक प्रवचन को सुनकर राजा जयकृष्ण दास गदगद हो गये और प्रवचन के बाद उन्होंने स्वामीजी को निवेदन किया कि महाराज आपके उपदेशामृत से जो ज्ञान गंगा प्रवाहित होती है उसका लाभ आपके प्रवचन में भाग लेने वाले कुछ ही लोगों को मिलता है। कुछ समय बाद यह लोग भी उपदेश का अधिकांश भाग विस्मृत कर देते हैं। जो लोग स्थान, समय व अन्य कारणों से आपके उपदेशों को सुनने के लिए उपस्थित नहीं हो पाते वह तो सर्वथा अनभिज्ञ ही रहते हैं। ○○

प्रेरक विचार

- जितनी भी आवश्यकताएं और इच्छाएं कम करते चले जाओगे उतना ही अधिक परमात्मा के निकट होते चले जाओगे।
- यदि भगवान की कृपा के पात्र बनने की अभिलाषा है तो भगवान जिस स्थिति में रखे उसी से संतुष्ट रहने की आदत बना लो।
- मितभाषिता बड़प्पन की निशानी है।
- जीवन प्रभु का प्रिय तब बनता है जब मन, वाणी और कर्म से किसी का अनिष्ट नहीं करता। काम, क्रोध, ईर्षा आदि मन के मैलों को त्याग देता है।
- कोई भी काम करने लगो तो याद रखो कि ईश्वर तुम्हें देख रहा है।

ऋषिबोध दिवस हमें बोध प्रदान कर मंगलमय हो

आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन का ध्येय था मोक्ष को प्राप्त करना। यह मोक्ष धन मनुष्य को प्राप्त होने वाला सर्वोत्तम धन है। इस धन के अभिलाषी दयानन्द सरस्वती अपने पूर्व जन्मों से भी अपने इस ध्येय के अनुकूल संस्कारों का कोष लेकर आये थे और उन्होंने वर्तमान जन्म में भी उन्हीं संस्कारों के अनुसार तीव्र गति से अपने ध्येय की ओर बढ़ना आरम्भ कर दिया था।

ऐसा विशिष्ट मानव अपने लक्ष्य के विपरीत इस संसार रूप सागर में उठती हुई लहरों के थपेड़ों से कभी विचलित नहीं होता है क्योंकि उसने तप के द्वारा उस शक्ति का संग्रह कर लिया होता है कि जो शक्ति संसार की इन विपरीत तरंगों से, जो कि उसके लक्ष्य में बाधक हैं, उनसे टक्कर लेकर उन्हें प्रबल धक्के से दूर धकेलती हुई इसे आगे बढ़ने का अवसर प्रदान कर सके।

ऐसा मानव अपने स्वभाव की दिशा को तो पहले ही बदल चुका होता है, इसलिये उसके पास अपने लक्ष्य से भटकाने वाले किसी प्रतिकूल संस्कार का भी दूर-दूर तक नामोनिशान नहीं होता है। वह अपने इस जीवन में भी लक्ष्य का निर्धारण प्रभु की कृपा से स्वयमेव कर लेता है क्योंकि उसके जीवन का लक्ष्यानुसारी निर्माण इस वर्तमान जीवन में ही आरम्भ नहीं हो रहा है अपितु उसके उज्ज्वल जीवन का निर्माण पहले से होकर आया है।

अहो! इसी कारण से फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी के दिवस ऋषिवर के जीवन में वह कैसी विचित्र घटना घटी कि उस दिन टंकारा के शिवमंदिर के दृश्य ने जिसमें कि अचेतन प्रतिमाओं पर चढ़ाये गये पदार्थों को चूहे खा रहे थे उनके पूर्वजन्म की संस्कार-माला का चित्र, उस घटना से विस्मित होकर अंतर्ध्यान होते ही उनके मन के चित्रपट पर अविकल खींच दिया।

प्रभु की कृपा से व्यवस्थानुसार ऋषिवर के संस्कार जग गये, ध्येय सामने आ गया और तत्काल ही वर्तमान के कार्यक्रम का सूत्रपात हो गया। यह सूत्रपात क्या था? यह सूत्रपात एक साधारण विचारधारा का प्रकाश मात्र ही न था अपितु यह एक अवश्यम्भावी कार्यक्रम का उपक्रम था। इस कार्यक्रम का ध्येय था-प्रभु दर्शन, जो कर्तव्य के रूप में बनकर पूर्वजन्म से ही संस्कार के रूप में आया था।

आदर्श महापुरुषों के जीवन की यह सबसे बड़ी विशेषता होती है कि वे ध्येय व उसको सिद्ध करने के कार्यक्रम का तत्काल ही निर्णय कर लेते हैं तथा तीव्र गति से उस कार्यक्रम का अनुष्ठान भी आरम्भ कर देते हैं। योगिराज स्वामी आत्मानन्द सरस्वती ने ऐसे महापुरुषों के लिये अथर्ववेद के एक मंत्र का अर्थ इस प्रकार प्रस्तुत किया है-

'यो वै ते विद्यादरणी याभ्यां निर्मथ्यते वसु। स विद्वान् ज्येष्ठं मन्येत स विद्याद् ब्राह्मणं महत्।।'

जो मनुष्य उन दो अरणियों को (ज्ञान और तप को) जानता है,जिनके मन्थन से सबको बसाने वाले भगवान् का मन्थन किया जाता है, वह ही विद्वान् उस ज्येष्ठ ब्रह्म का मनन करता है और वह ही उस सबसे महान् ब्रह्म तत्व को जानता है।

'अथर्ववेद में वर्णित ज्ञान व तप नामक ये दोनों अरणियां महर्षि दयानन्द सरस्वती के हाथ में था। ज्ञान तो उन्हें अपनी पूर्व संचित सामग्री के रूप में प्राप्त हो गया था, इसमें जो कुछ विस्मरण का आवरण था उसे प्रभु की कृपा ने उस व्रत के दिन अंतर्ध्यान होते ही हटा दिया। अहो! अब उनके सामने अपने संस्कार रूप ज्ञान के प्रकट होते ही, इससे आगे का उनके जीवन का सारा ही कार्यक्रम एक कठोर उग्रतप की विचित्र झांकी है।

उनके जीवन-चरित्र में इस विचित्र झांकी के दर्शन होते हैं। इन ज्ञान व तप के द्वारा जिस आत्मा में ब्रह्म की शक्तियों का विकास हो जाता है, वह उसी ब्रह्म से प्रेरित होकर लोक कल्याण के कार्यों में लग जाता है। ब्रह्म प्राप्त होने के अनंतर ऋषि के जीवन का सारा ही दृश्य ऐसा है। इस दृश्य से अभिभूत आर्यजन फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी के दिन ऋषिबोध पर्व मनाते हैं।

आज के दिन एक घटना से विस्मित होकर अंतर्हित हुए महर्षि को अपने अंत:करण में विराजमान, परन्तु कुछ ओझल ईश्वर प्राप्ति की प्रबल अभिलाषा का बोध हुआ था और उस दिन ही हम भी किसी अन्य विशेष घटना से नहीं, अपितु बोध की ही इस विचित्र घटना से बोध प्राप्त करना चाहते हैं। ऐसा करके हम उनके आदर्श जीवन के अनुगामी बनकर अभ्युदय व मोक्ष प्राप्त करने के अधिकारी बन सकते हैं।

OO

योगः कर्मसु कौशलम्

डॉ. शिव प्रसाद शर्मा

योगविषये महामुनिपञ्जलिना निर्दिष्टं योगश्चित्तवृत्तिनिरोध इति। श्रीमद्भगवद्-गीतायामपि भगवता श्रीकृष्णचंद्रश्च समुपन्यस्तम्- 'योगः कर्मसु कौशलम्।' युजियोंगे धातोर्व्युत्पन्नो योग-शब्दः कस्मिन्नकर्मणि न प्रवर्तनायोपदिशानमातिजनान्।

यदि वयमत्र किमापि कार्यं परिश्रमेण साध्यमनायासेन वा साध्यं कर्तुं विचारयामस्तदानीं मनस एकाग्रता तत्रापेक्षते, नो चेत् सुखसाध्यमपि कार्यं दुरूहं भवति। श्रीमद्भगवद्गीतायां गाण्डीवधारी पार्थः युद्धपराङ्मुखो भगवन्तं निवेदयति मनसश्चञ्चलत्वविषये। यथा-

चञ्चलं हि मनः कृष्ण! प्रमाथी बलवद्दृढम्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्॥

अर्थात् हे भगवन् एतन्मनः प्रमाथी मनुजानां समधिकं चञ्चलं विद्यते तथा वायुः यत्र सर्वत्र प्रचलति तत् वातम् एकत्रीकर्तुमवरोद्धं वा कोऽपि नैष पारयति, तथैव मनोऽपि रागादिभ्यो नैव परावर्तते, नैव च स्थीर्यते। एकाग्रेणैवमनसा कार्य सम्पादयितुं शक्यते, न तु चञ्चलेन मनसा। यम-नियम-आसन-प्राणायाम प्रतयाह्वानधारणा समाधय समधिकं महत्वमुत्तरोत्तरमवधारयन्ति, परं प्रथमं मनसि स्थैर्य्यमपेक्ष्यते। तत्रोत्तरं दीयमानस्य कृष्णवचनं-

असंशयं महाबाहो! मनो दुर्निग्रहचञ्चलम्।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्रयेण च गृह्यते॥
असंयतात्मानां योगो दुष्प्राप इति मे मतिः।
यस्यात्मना तु यतता शक्योऽवाप्तुमुपायतः॥

अभ्यासेन वैराग्येण, वश्यात्मना च मनः स्वायत्तीकर्तु शक्यते। तदनु कार्यसिद्धिमेष्यति। स एव योगस्तपसि संलग्नानां महापुरुषाणां स्वरूपं निरूपयन् एकत्र भगवता प्रतिपादितम् यथा निर्वातस्थाने स्थितः दीपो नैव विचलति, नैव स्पन्दते, एवमेव दत्तचित्तस्य योगिन आत्मनां योगे युञ्जतः दीपो स्थितिर्भवति।

अयं ध्यानयोगः कार्यसिद्धोः साधको भवतिः किंतु ध्यानयोगेऽपि अभ्यासमपेक्ष्यते। स्थिरबुद्धिरेव मानवं लौकिकं पारलौकिकं वा कार्यं साधयितुं पारयति एवमेव भक्तियोगे भगवान् कृष्णः सूचयति अर्जुनं-

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥

भगवतोऽनन्यभावेन स्मरणं तदनु सः स्वयमेव तेषां योगक्षेमस्योत्तरदायित्वं निर्वहति, तस्यैव भगवतो वचनं योगक्षेमं वहाम्यहमिति। वयं सर्वदा वाञ्छामप्रारंभिकै कार्यं निर्विघ्नपरिसमाप्तं भवेदिति। परं यत्ये कृतेऽपि असिद्धस्य कार्यस्य पुनः पुनः फलोदयं यावत् न परित्यज्य कर्त्तव्यम् तथा कृते कार्यं सिद्धिर्भविष्यति।

कर्मयोगिनः कदापि न विरमन्ति कार्यात् अभ्यासाच्च। फलं यास्तु परं कार्यं च कर्त्तव्यमित्येव बुद्ध्या यः निरन्तरं कर्म करोति, तस्यैव लोके समादरो भवति। स्वार्थपरतया कार्याणि यथा क्रियन्ते, तथैव परमार्थमपि कार्यं स्वात्तदा कर्म इति कथ्यते। अत एव उक्तं भगवता श्रीकृष्णेन गीतायां-

तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः।
कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद् योगी भावार्जुन॥

इत्थं सर्वेषु शास्त्रप्रतिपादितेषु कर्मसु योग एवं कर्माधिकः सुगमः सर्वकार्यसाधकश्चेति।

उक्तश्च- **'योगः कर्मसु कौशलम्।'**

OO

- **अगर मनुष्य का मन शांत है, चित्त प्रसन्न है, हृदय हर्षित है, तो निश्चय ही ये अच्छे कर्मों का फल है।**
- **जिस मनुष्य में संतुष्टि के अंकुर फूट गये हों, वो संसार के सुखी मनुष्यों मे गिना जाता है।**
- **यश और कीर्ति ऐसी विभूतियां हैं, जो मनुष्य को संसार के माया जाल से निकलने मे सबसे बड़े अवरोधक हैं।**
- **आत्मा, परमात्मा का एक अंश है, जिसे हम अपने कर्मों से गति प्रदान करते हैं। फिर आत्मा हमारी दशा तय करती है।**
- **जिसने गर्व किया, उसका पतन अवश्य हुआ है।**

रक्त साक्षी पंडित लेखराम आर्य

बलिदान दिवस
शत्-शत् नमन

पंडित लेखराम आर्य (1858-1897), आर्य समाज के प्रमुख कार्यकर्ता एवं प्रचारक थे। उन्होंने अपना सारा जीवन आर्य समाज के प्रचार प्रसार में लगा दिया। वे अहमदिया मुस्लिम समुदाय के नेता मिर्जा गुलाम अहमद से शास्त्रार्थ एवं उसके दुस्प्रचारों के खंडन के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। उनका संदेश था कि तहरीर (लेखन) और तकरीर (शास्त्रार्थ) का काम बंद नहीं होना चाहिए। पंडित लेखराम इतिहास की उन महान हस्तियों में शामिल हैं जिन्होंने धर्म की बलिवेदी पर प्राण न्योछावर कर दिए। जीवन के अंतिम क्षण तक आप वैदिक धर्म की रक्षा में लगे रहे। पंडित लेखराम ने अपने प्राणों की परवाह न करते हुए हिंदुओं को धर्म परिवर्तन से रोका व शुद्धि अभियान के प्रणेता बने। लेखराम का जन्म 8 चैत्र, संवत् 1915 (1858 ई.) को झेलम जिला के तहसील चकवाल के सैदपुर गांव में हुआ था। उनके पूर्वज महाराजा रणजीत सिंह की फौज में थे। उनके पिता का नाम तारा सिंह एवं माता का नाम भाग भरी था। स्वामी दयानंद का जीवनचरित् लिखने के उद्देश्य से उनके जीवन संबंधी घटनाएं इकट्ठी करने के सिलसिले में उन्हें भारत के बहुसंख्यक स्थानों का दौरा करना पड़ा। इस कारण उनका नाम 'आर्य मुसाफिर' पड़ गया। पं लेखराम हिंदुओं को मुसलमान होने से बचाते थे। एक कट्टर मुसलमान ने 3 मार्च सन् 1897 को ईद के दिन, 'शुद्धि' कराने के बहाने, धोखे से लाहौर में उनकी हत्या कर डाली। उनका कहना था आर्यसमाज से तहरीर और तकरीर का कार्य बंद नहीं होना चाहिए।

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी

पुण्यतिथि
शत्-शत् नमन

पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी (26 अप्रैल 1864-1890), महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य शिष्य एवं कालान्तर में आर्यसमाज के प्रमुख नेता थे। उनकी गिनती आर्य समाज के पांच प्रमुख नेताओं में होती है। 26 वर्ष की अल्पायु में ही उनका देहान्त हो गया किन्तु उतने ही समय में उन्होने अपनी विद्वता की छाप छोड़ी और अनेकानेक विद्वतापूर्ण ग्रन्थों की रचना की। अद्भुत प्रतिभा, अपूर्व विद्वत्ता एवं गम्भीर वक्तृत्व-कला के धनी पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी का जन्म 26 अप्रैल 1864 को मुल्तान के प्रसिद्ध 'वीर सरदाना' कुल में हुआ था। आपके पिता लाला रामकृष्ण फारसी के विद्वान थे। आप पंजाब के शिक्षा विभाग में अध्यापक थे। विशिष्ट मेधा एवं सीखने की उत्कृट लगन के कारण वे अपने साथियों में बिल्कुल अनूठे थे। किशोरावस्था में ही उनका हिन्दी, उर्दू, अरबी एवं फारसी पर अच्छा अधिकार हो गया था तथा उसी समय उन्होंने 'द बाइबिल इन इण्डिया' तथा 'ग्रीस इन इण्डिया' जैसे बड़े-बड़े ग्रन्थ पढ़ लिये। कॉलेज के द्वितीय वर्ष तक उन्होंने चार्ल्स ब्रेडले, जेरेमी बेन्थम, जॉन स्टुअर्ट मिल जैसे पाश्चात्य विचारकों के शतश: ग्रन्थ पढ़ लिये। वे मार्च, 1886 में पंजाब विश्वविद्यालय की एम.ए. (विज्ञान, नेचुरल साइंस) में सर्वप्रथम रहे। तत्कालीन महान समाज सुधारक महर्षि दयानन्द के कार्यों से प्रभावित होकर उन्होंने 20 जून 1880 को आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण की। महात्मा हंसराज व लाला लाजपत राय उनके सहाध्यायी तथा मित्र थे। वह 'द रिजेनरेटर ऑफ आर्यावर्त' के वे सम्पादक रहे। 1884 में उन्होंने 'आर्यसमाज साइंस इन्स्टीट्यूशन' की स्थापना की। अपने स्वतन्त्र चिन्तन के कारण इनके अन्तर्मन में नास्तिकता का भाव जागृत हो गया। दीपावली (1883) के दिन, महाप्रयाण का आलिंगन करते हुए महर्षि दयानन्द के अन्तिम दर्शन ने गुरुदत्त की विचारधरा को पूर्णत: बदल दिया। अब वे पूर्ण आस्तिक एवं भारतीय संस्कृति एवं परम्परा के प्रबल समर्थक एवं उन्नायक बन गए। वे डीएवी के मंत्रदाता एवं सूत्रधार थे। पूरे भारत में साइंस के सीनियर प्रोफेसर नियुक्त होने वाले वह प्रथम भारतीय थे। वे गम्भीर वक्ता थे, जिन्हें सुनने के लिए भीड़ उमड़ पड़ती थी। उन्होंने कई गम्भीर ग्रन्थ लिखे, उपनिषदों का अनुवाद किया। उनके जीवन में उच्च आचरण, आध्यात्मिकता, विद्वत्ता व ईश्वरभक्ति का अद्भुत समन्वय था। उन्हें वेद और संस्कृत से इतना प्यार था कि वे प्राय: कहते थे कि- 'कितना अच्छा हो यदि मैं समस्त विदेशी शिक्षा को पूर्णतया भूल जाऊं तथा केवल विशुद्ध संस्कृतज्ञ बन सकूं।' 'वैदिक मैगजीन' के नाम से निकाले उनके रिसर्च जर्नल की ख्याति देश-विदेश में फैल गई। यदि वे दस वर्ष भी और जीवित रहते तो भारतीय संस्कृति का बौद्धिक साम्राज्य खड़ा कर देते। पर, विधि के विधान स्वरूप उन्होंने 19 मार्च 1890 को चिरयात्रा की तरफ प्रस्थान कर लिया। पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ ने 2000 ई. में उनके सम्मान में अपने रसायन विभाग के भवन का नाम 'पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी हाल' रखा है। आर्य समाज को उन पर नाज है!

अमर शहीद भगत सिंह

बलिदान दिवस
शत्-शत् नमन

भगत सिंह (जन्म : 27 सितम्बर 1907, बलिदान : 23 मार्च 1931) भारत के एक प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थे। भगतसिंह संधु जाट सिक्ख थे उन्होंने देश की आज़ादी के लिए जिस साहस के साथ शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार का मुक़ाबला किया, वह भुलाया नहीं जा सकता। इन्होंने केन्द्रीय संसद में बम फेंककर भी भागने से मना कर दिया। जिसके फलस्वरूप इन्हें 23 मार्च 1931 को इनके दो अन्य साथियों, राजगुरु तथा सुखदेव के साथ फांसी पर लटका दिया गया। सारे देश ने उनके बलिदान को बड़ी गम्भीरता से याद किया। पहले लाहौर में साण्डर्स की हत्या और उसके बाद दिल्ली की केन्द्रीय असेम्बली में चन्द्रशेखर आजाद व पार्टी के अन्य सदस्यों के साथ बम-विस्फोट करके ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध खुले विद्रोह को बुलंदी प्रदान की। भगत सिंह को समाजवादी,वामपंथी और मार्क्सवादी विचारधारा में रुचि थी। अमृतसर में 13 अप्रैल 1919 को हुए जलियांवाला बाग हत्याकांड ने भगत सिंह की सोच पर गहरा प्रभाव डाला था। लाहौर के नेशनल कॉलेज़ की पढ़ाई छोड़कर भगत सिंह ने भारत की आज़ादी के लिये नौजवान भारत सभा की स्थापना की थी। काकोरी कांड में राम प्रसाद 'बिस्मिल' सहित 4 क्रांतिकारियों को फांसी व 16 अन्य को कारावास की सजाओं से भगत सिंह इतने अधिक उद्विग्न हुए कि पंडित चन्द्रशेखर आजाद के साथ उनकी पार्टी हिन्दुस्तान रिपब्लिकन ऐसोसिएशन से जुड गये और उसे एक नया नाम दिया हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन।

अमर शहीद शिवराम हरि राजगुरु

बलिदान दिवस
शत्-शत् नमन

शिवराम हरि राजगुरु (जन्म : 24 अगस्त 1908-बलिदान: 23 मार्च 1931) भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख क्रांतिकारी थे। इन्हें भगत सिंह और सुखदेव के साथ 23 मार्च 1931 को फांसी पर लटका दिया गया था। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में राजगुरु की शहादत एक महत्वपूर्ण घटना थी। शिवराम हरि राजगुरु का जन्म भाद्रपद के कृष्णपक्ष की त्रयोदशी सम्वत् 1965 में पुणे जिला के खेडा गांव में हुआ था। 6 वर्ष की आयु में पिता का निधन हो जाने से बहुत छोटी उम्र में ही ये वाराणसी विद्याध्ययन करने एवं संस्कृत सीखने आ गये थे। इन्होंने हिन्दू धर्म-ग्रंन्थों तथा वेदों का अध्ययन तो किया ही लघु सिद्धान्त कौमुदी जैसा क्लिष्ट ग्रन्थ बहुत कम आयु में कंठस्थ कर लिया था। इन्हें व्यायाम का बेहद शौक था और छत्रपति शिवाजी की छापामार युद्ध-शैली के बड़े प्रशंसक थे। वाराणसी में विद्याध्ययन करते हुए राजगुरु का सम्पर्क अनेक क्रांतिकारियों से हुआ। चन्द्रशेखर आजाद से इतने अधिक प्रभावित हुए कि उनकी पार्टी हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी से तत्काल जुड़ गये। आजाद की पार्टी के अन्दर इन्हें रघुनाथ के छद्म-नाम से जाना जाता था, राजगुरु के नाम से नहीं। पंडित चन्द्रशेखर आज़ाद, सरदार भगत सिंह और यतीन्द्रनाथ दास आदि क्रांतिकारी इनके अभिन्न मित्र थे।

अमर शहीद सुखदेव थापर

बलिदान दिवस
शत्-शत् नमन

सुखदेव थापर का जन्म पंजाब के शहर लायलपुर में श्रीयुत् रामलाल थापर व श्रीमती रल्ली देवी के घर विक्रमी सम्वत् 1964 के फाल्गुन मास में शुक्ल पक्ष सप्तमी तदनुसार 15 मई 1907 को अपरान्ह पौने ग्यारह बजे हुआ था। जन्म से तीन माह पूर्व ही पिता का स्वर्गवास हो जाने के कारण इनके ताऊ अचिन्तराम ने इनका पालन पोषण करने में इनकी माता को पूर्ण सहयोग किया। सुखदेव की तायी जी ने भी इन्हें अपने पुत्र की तरह पाला। लाला लाजपत राय की मौत का बदला लेने के लिये जब योजना बनी तो साण्डर्स का वध करने में इन्होंने भगत सिंह तथा राजगुरु का पूरा साथ दिया था। यही नहीं, सन् 1929 में जेल में कैदियों के साथ अमानवीय व्यवहार किये जाने के विरोध में राजनीतिक बंदियों द्वारा की गयी व्यापक हड़ताल में बढ़-चढ़कर भाग भी लिया था। गांधी-इर्विन समझौते के संदर्भ में इन्होंने एक खुला खत गांधी के नाम अंग्रेजी में लिखा था जिसमें इन्होंने महात्मा जी से कुछ गंभीर प्रश्न किये थे। उनका उत्तर यह मिला कि निर्धारित तिथि और समय से पूर्व जेल मैनुअल के नियमों को दरकिनार रखते हुए 23 मार्च 1931 को सायंकाल 7 बजे सुखदेव, राजगुरु और भगत सिंह तीनों को लाहौर सेंट्रल जेल में फांसी पर लटका कर मार डाला गया।

स्वामी दयानन्द की महानता

कमलेश कुमार आर्य
किशनगढ़-राजस्थान

स्वामी दयानन्द अपने समय के महान ब्रह्मवेता, वेदज्ञ, दार्शनिक, योगी एवं स्पष्टवादी थे। ऋषियों की परम्परा में उनका विशिष्ट स्थान रहा। अदिसृष्टि से महाभारतकाल पर्यन्त जितने ऋषि-महर्षि हुए उन्हें वैदिक मान्यताओं का प्रचार-प्रसार करने में किन्हीं कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ा। जबकि स्वामी दयानन्द ने अनेकानेक कष्टों-क्लेशों, आपत्तियों, विपत्तियों को सहकर अवैदिक मत-पंथों द्वारा फैलाए अविद्या-अंधकार में ईश्वरीय वेद का प्रकाश किया, सभी इतिहासविद यह जानते हैं।

स्वामी दयानन्द द्वारा लिखित 'सत्यार्थप्रकाश' की भूमिका को पढ़ने से ज्ञात होता है, उनके हृदय में सत्य के प्रति अत्यधिक निष्ठा थी। उन्होंने लिखा है- मेरा इस ग्रंथ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, ...क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्यजाति की उन्नति का कारण नहीं है। वे आगे लिखते हैं- 'बहुत से हठी दुराग्रही मनुष्य होते हैं कि जो वक्ता के अभिप्राय से विरुद्ध कल्पना किया करते हैं क्योंकि मत के आग्रह से उनकी बुद्धि अंधकार में फंस के नष्ट हो जाती है।' अंत में स्वामी दयानन्द ने अपने हृदयगत भावों को स्पष्ट करते हुए बता दिया कि... 'यद्यपि इस ग्रंथ को देखकर अविद्वान लोग अन्यथा ही विचारेंगे तथापि बुद्धिमान लोग. यथायोग्य इसका अभिप्राय समझेंगे।

महान आस्तिक स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश का शुभारम्भ ईश्वर विषयक प्रसंग से किया और परमात्मा के नामों पर व्याप्त भ्रांतियों का सप्रमाण निराकरण करके अध्यात्म संबंधी एक बहुत बड़ी उलझन को सुलझा दिया। उन्होंने सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास में वेद, उपनिषद, दर्शन, मनुस्मृति आदि ग्रंथों के प्रमाण देकर ये सिद्ध कर दिया कि प्रकरण के अनुसार शब्दों के अर्थ करना बुद्धिसंगत है।

ईश्वर के जिन नामों का उल्लेख है वे हैं- ओ३म्, खम्, ब्रह्म, ब्रह्मा, बृहस्पति, बुध, बंधु, बुद्ध, अग्नि, अर्यमा, अन्न, अन्नाद, अत्ता, अज, अनन्त, अनादि, अद्वैत, अन्तर्यामी, मनु, मातरिश्वा, मित्र, मंगल, माता, मुक्त, महादेव, प्रजापति, प्राण, प्राज्ञ, परमेश्वर, परमात्मा, पृथिवी, पिता, विराट, विश्व, वायु, वरुण, वसु, विश्वेश्वर, विश्वम्भर, रुद्र, राहु, शिव, शुक्र, शनैश्चर, शुद्ध, शक्ति, श्री, शेष, शंकर, स्वराट्, सुपर्ण, सूर्य, सविता, सत्य, सत्, सच्चिदानंद स्वरूप, सरस्वती, सर्वशक्तिमान, सगुण, स्वयंभू, दिव्य, देव, देवी, दयालु, केतु, कालाग्नि, कुबेर, कूटस्थ, काल, कवि, गुरुत्मान्, गुरु, गणपति, भूमि, भगवान्, हिरण्यगर्भ, होता, तैजस, आदित्य, आकाश, आचार्य, आनंद, आप्त, उरुक्रम, जल, नारायण, नित्य, निराकार, निरंजन, न्यायकारी, निर्गुण, चन्द्र, चित्, यज्ञ, यम, ज्ञान, लक्ष्मी, धर्म्मराज।

ये नाम मैंने क्रमशः न लिखकर प्रथम अक्षर के आधार पर इसलिए लिखें हैं कि एक ही नाम कहीं दो बार पढ़ने में न आवे, क्योंकि सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास में कहीं-कहीं एक ही नाम अनेकबार व्याख्या सहित लिखा है। स्वामी दयानन्द ने उपर्युक्त नाम केवल ईश्वर के ही नाम अपितु अन्य पदार्थों के लिए भी स्वीकारें हैं, साथ ही वेद एवं वैदिक साहित्य में ये नाम मुख्यतः ईश्वरवाची हैं, यह स्पष्ट किया है। जैसा मैंने समझा उनके अनुसार इस पुस्तिका में सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास का सार लिखा है। सामान्य योग्यता वाले पाठक इसे आसानी से समझ कर शाब्दिक दृष्टि से ईश्वर के यथार्थ स्वरूप को जान लेंगे, यह मेरा विश्वास है-

सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास का सार : ओ३म् यह ओंकार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है, क्योंकि इसमें जो अ, उ और म् तीन अक्षर मिलकर एक 'ओ३म्' समुदाय हुआ है। इस एक नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आते हैं, जैसे- 'अकार' से विराट, अग्नि और विश्वादि। 'उकार' से हिरण्यगर्भ, वायु और तेजसादि। 'मकार' से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादि नामों का वाचक और ग्राहक है। ...रक्षा करने से 'ओ३म्', आकाशवत् व्यापक होने से 'खम्' और सबसे बड़ा होने से 'ब्रह्म' ईश्वर का नाम है। स्वप्रकाश होने से 'अग्नि', विज्ञानस्वरूप होने से 'मनु', सबका पालन करने से 'प्रजापति', परमेश्वर्यवान होने से 'इन्द्र', सबका जीवन मूल होने से 'प्राण' और निरंतर व्यापक होने से परमेश्वर का नाम 'ब्रह्म' है।

सब जगत के बनाने से 'ब्रह्मा', सर्वत्र व्यापक होने से 'विष्णु', दुष्टों को दण्ड देके रुलाने से 'रुद्र', मंगलमय और सबका कल्याणकर्ता होने से 'शिव', ...जो सर्वत्र व्याप्त अविनाशी 'स्वराट्', स्वयं प्रकाशस्वरूप और

काल का भी काल है, इसलिए परमेश्वर का नाम 'कालाग्नि' है।

'दिव्य' जो प्रकृत्यादि दिव्य पदार्थों में व्याप्त, 'सुपर्ण' जिसके उत्तम पालन और पूर्ण कर्म है, 'गुरुत्मान' जिसका आत्मा अर्थात् स्वरूप महान है, 'मातरिश्वा' जो वायु के समान अनंत बलवान है, इसलिए परमात्मा के दिव्य, सुपर्ण, गुरुत्मान् और मातरिश्वा ये नाम हैं।

...जिसमें सब भूत प्राणी होते हैं इसलिए ईश्वर का नाम 'भूमि' है। जो बहु प्रकार के जगत को प्रकाशित करे इससे 'विराट' नाम से परमेश्वर का ग्रहण होता है। जो ज्ञानस्वरूप सर्वज्ञ जानने, प्राप्त होने और पूजा करने योग्य है, इससे उस परमेश्वर का नाम 'अग्नि' है। जिसमें आकाशादि सब भूत प्रवेश कर रहे हैं अथवा जो इनमें व्याप्त होके प्रविष्ट हो रहा है इसलिए उस परमेश्वर का नाम 'विश्व' है।

जो चराचर जगत का धारण, जीवन और प्रलय करता और सब बलवानों से बलवान है, इससे उस ईश्वर का नाम 'वायु' है। जो आप स्वयं प्रकाश और सूर्यादि तेजस्वी लोकों का प्रकाश करने वाला है, इससे उस ईश्वर का नाम 'तैजस' है। जिसका सत्य विचारशील ज्ञान और अनंत ऐश्वर्य है, इससे उस परमात्मा का नाम 'ईश्वर' है।

जिसका विनाश कभी न हो उसी ईश्वर की 'आदित्य' संज्ञा है। जो निर्भ्रान्त सब चराचर जगत् के व्यवहार को यथावत् जानता है इससे ईश्वर का नाम 'प्राज्ञ' है। जो गुण, कर्म, स्वभाव और सत्य-सत्य व्यवहारों में सबसे अधिक हो, उन सब श्रेष्ठों में भी जो अत्यंत श्रेष्ठ है, उसको 'परमेश्वर' कहते हैं।

जो सबसे स्नेह की और सबसे प्रीति करने योग्य है इससे उस परमेश्वर का नाम 'मित्र' है। जो आप्त विद्वान मुक्ति की इच्छा करने वाले मुक्त और धर्मात्माओं का स्वीकारकर्ता अथवा जो शिष्ट मुमुक्षु मुक्त और धर्मात्माओं से ग्रहण किया जाता है वह ईश्वर 'वरुण' संज्ञक है। जो सत्य न्याय के करने हारे मनुष्यों का मान्य और पाप तथा पुण्य करने वालों को पाप और पुण्य के फलों का यथावत् सत्य-सत्य नियमकर्ता है इसी से उस परमेश्वर का नाम 'अर्यमा' है।

जो अखिल ऐश्वर्ययुक्त है इससे उस परमात्मा का नाम इन्द्र है। जो बड़ों से भी बड़ा और बड़े आकाशादि ब्रह्माओं का स्वामी है इससे उस परमेश्वर का नाम 'बृहस्पति' है। चर और अचर रूप जगत में व्यापक होने से परमात्मा का नाम 'विष्णु' है। अनंत पराक्रमयुक्त होने से परमात्मा का नाम 'उरुक्रम' है। जो जगत नाम प्राणी चेतन और जंगम अर्थात् जो चलते फिरते हैं... अप्राणी अर्थात् स्थावर जड़ अर्थात् पृथिवी आदि हैं, उन सबके आत्मा होने और स्वप्रकाशरूप सबके प्रकाश करने से परमेश्वर का नाम 'सूर्य' है। जो सब जीवादि जगत में निरंतर व्यापक हो रहा है। जो सब जीव आदि से उत्कृष्ट और जीव प्रकृति तथा आकाश से भी अति सूक्ष्म और सब जीवों का अंतर्यामी आत्मा है इससे ईश्वर का नाम 'परमात्मा' है।

जो ईश्वरों अर्थात् समर्थों में समर्थ, जिसके तुल्य कोई भी न हो उसका नाम परमेश्वर है। जो सब जगत की उत्पत्ति करता है इसलिए परमेश्वर का नाम 'सविता' है। जो शुद्ध जगत को क्रीडा कराने... धार्मिकों को जिताने की इच्छायुक्त सब चेष्टा के साधनोपसाधनों का दाता स्वयं प्रकाश स्वरूप सबका प्रकाशक प्रशंसा के योग्य... आप आनंदस्वरूप और दूसरों को आनंद देने हारा... मदोन्मतों का ताड़नेहारा... सब के शयनार्थ रात्रि और प्रलय का करने हारा... कामना के योग्य और ज्ञानस्वरूप है इसलिए उस परमेश्वर का नाम 'देव' है।

अथवा जो अपने स्वरूप में आनंद से आप ही क्रीडा करे अथवा किसी के सहाय के बिना क्रीडावत् सहज स्वभाव से सब जगत् को बनाता वा सब क्रीडाओं का आधार है। जो सबका जीतने हारा स्वयं अजेय अर्थात् जिसको कोई भी न जीत सके। जो न्याय और अन्यायरूप व्यवहारों का जाननेहारा और उपदेष्टा जो सब का प्रकाशक... जो सब मनुष्यों की प्रशंसा के योग्य और निंदा के योग्य न हो... जो स्वयं आनंद स्वरूप और दूसरों को आनंद कराता, जिसको दु:ख का लेश भी न हो... जो सदा हर्षित, शोक रहित और दूसरों को हर्षित करने और दु:खों से पृथक रखने वाला...जो प्रलय समय अव्यक्त में सब जीवों को सुलाता... जिसके सब सत्यकाम और जिसकी प्राप्ति की कामना सब शिष्ट करते हैं तथा जो सबमें व्याप्त और जानने के योग्य है इससे उस परमेश्वर का नाम 'देव' है।

जो अपनी व्याप्ति से सबका आच्छादन करे इससे उस परमेश्वर का नाम 'कुबेर' है। जो सब विस्तृत जगत का विस्तार करने वाला है इसलिए उस परमेश्वर का नाम 'पृथिवी' है। जो दुष्टों का ताडन और अव्यक्त तथा परमाणुओं का अन्योन्य संयोग व वियोग करता है वह परमात्मा 'जल' संज्ञक कहाता है।

OO

ऋषि स्वामी दयानन्द का स्वराज-चिन्तन

स्व. डॉ. भवानीलाल भारतीय

उन्नीसवीं शताब्दी में ऋषि दयानन्द ही प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने भारत पर भारतवासियों का स्वत्व रहे, इस सत्य की निर्भीकतापूर्वक घोषणा की। होमरूल आंदोलन की प्रवर्त्तक श्रीमती ऐनी बेसेंट ने इसी तथ्य का उद्घाटन करते हुए कहा था– Dayanand was first to proclaim India for Indians. विचार करने की बात है कि स्वामी दयानन्द ने जब 1874–75 में स्वदेशी राज्य की बात की और आर्यावर्त की पराधीनता पर खेद प्रकट करते हुए आर्यों के अखण्ड, चक्रवर्ती, सार्वभौम साम्राज्य के लिए परमात्मा से कामना की, उस समय तक भारत के सार्वजनिक क्षितिज पर स्वराज्य या स्वतंत्रता की कोई चर्चा ही नहीं थी।

दादाभाई नौरोजी ने तो 1906 में पहली बार 'स्वराज्य' शब्द का उच्चारण किया था और उसके दस वर्ष बाद लखनऊ कांग्रेस में तिलक ने स्वराज्य को भारतवासियों का जन्मसिद्ध अधिकार घोषित किया। किंतु कांग्रेस ने देश की पूर्ण स्वतंत्रता को लक्ष्य बनाते हुए लाहौर कांग्रेस (1929) में ही अपना प्रस्ताव स्वीकार किया था।

स्वामी दयानन्द ने तो सत्यार्थ प्रकाश की रचना करते समय ही यह स्पष्ट घोषित कर दिया था कि 'जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मत-मतान्तर के आग्रह से रहित, अपने और पराये का पक्षपात शून्य, प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।'

यह लिखते समय स्वामी जी ने पराधीनता के कारणों का भी विश्लेषण किया और बताया कि 'अभाग्योदय और आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की तो कथा ही क्या कहनी, किंतु आर्यावर्त में भी आर्यों का अखण्ड, चक्रवर्ती, स्वाधीन, स्वतंत्र, निर्भय राज्य नहीं है।' पाठक जरा महाराज के शब्द चयन पर विचार करें। वे चाहते थे भारत में भारतीयों का राज्य जब हो तो वह अखण्ड हो, स्वाधीन हो, स्वतंत्र तथा निर्भीक हो।

स्वामी जी ने यह भी अनुभव किया था कि कहने को तो अंग्रेजी राज्य (British India) में भी यत्र-तत्र हिंदू, मुसलमान, सिख आदि देशी राजाओं का राज्य है। किंतु ये राज्य कैसे हैं? सुनिये-'जो कुछ है सो भी विदेशियों से पदाक्रांत हो रहे हैं।' तब स्वराज्य कैसे प्राप्त होगा? 'ऋषि की सम्मति में इसके लिए देशवासियों में सच्ची राष्ट्रीय एकता भरनी होगी।' भाषा, शिक्षा, व्यवहार और आचरण में जब तक विदेशी भाव दूर नहीं होंगे स्वराज्य स्वप्नवत् ही रहेगा। इसको कठिन बताते हुए वे पुनः लिखते हैं– 'परंतु भिन्न-भिन्न भाषा, पृथक-पृथक शिक्षा, अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है। बिना इसके छूटे परस्पर का उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना दुष्कर है।'

अब देखना यह है कि क्या देश की पराधीनता पर दुःख व्यक्त करने और भारत को स्वतंत्र देखने की कामना के विचार स्वामी दयानन्द के जीवन में कब उद्भूत हुए। युवा मूलशंकर ने जब 21 वर्ष की युवावस्था में स्वगृह का त्याग किया था उस समय उसके मानस में सच्चे शिव का दर्शन (मूर्तिपूजा से हुई विरक्ति के कारण) तथा मृत्यु के रहस्य को जानकर उस पर विजय प्राप्त करने के भाव ही प्रमुख रूप से थे। जब उन्होंने नैष्ठिक ब्रह्मचर्य धारण किया और कुछ काल पश्चात् ही संन्यास ले लिया तो उन्हें योग साधना में प्रवृत्त होना पड़ा। एतदर्त वे सच्चे योगियों की तलाश में सर्वप्रथम अपने ही प्रांत गुजरात और तदुपरांत आबू पर्व तथा नर्मदा के तटवर्ती प्रांतों में वर्षों तक घूमते रहे। साथ ही शास्त्रों का अभ्यास करने का क्रम भी जारी रहा।

1856–57 के वर्षों में वे देश और दुनिया से कटे हुए सर्वथा असम्पृक्त से नर्मदा के किनारे के गहन आरण्यक अंचलों में विचरण कर रहे थे। उन दिनों की सैनिक और राजनीतिक हलचल की खबर उन्हें थी या नहीं, इसके बारे में प्रमाणपूर्वक कुछ भी कहना कठिन है। किंतु इतना सत्य है कि 1860 में जब वे स्वामी विरजानन्द की पाठशाला में प्रविष्ट होते हैं तब उनमें संस्कृत विद्या में प्रवीण होने तथा व्याकरणादि शास्त्रों में पटुता प्राप्त करने की ही उत्कट इच्छा थी।

यहां एक बात अवश्य कहनी है। स्वामी दयानन्द के शास्त्रगुरु दंडी विरजानन्द के वैचारिक पक्ष पर हम लोगों का ध्यान बहुत कम गया है। पं. लेखराम, देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय आदि उनके जीवनी-लेखकों ने उनके अपार शास्त्रज्ञान, आर्ष शास्त्रों के उद्धार हेतु किये गये प्रयत्नों आदि की चर्चा तो की है परंतु स्वामी वेदानन्द तीर्थ तथा

कोटा के प्रो. भीमसेन शास्त्री द्वारा लिखित दण्डीजी के जीवन चरित में यह तथ्य भी उभर कर सामने आया है कि इस अंध संन्यासी के हृदय में देश की पराधीनता को लेकर अपार पीड़ा थी। वह चाहता था कि किसी न किसी प्रकार से देश स्वाधीन हो तथा विदेशियों के क्रूर पाश से उसे मुक्ति मिले। दंडी जी के एक शिष्य नवनीत चौबे ने एक कवित्त छंद में प्रज्ञाचक्षु गुरु के हृदय में विदेशी शासन के प्रति आक्रोश के इसी उद्दीप्त भाव को यों प्रकट किया है-

उन्नत ललाट बल बहुल विशाल मुण्ड,
अक्षमाल भाल भव्य चंदन त्रिपुण्डी ने।
नवनीत प्यारे परपच्छ गिरि पच्छन पै,
वज्राघात डिण्डिम नाम खलखण्डी ने॥
सम्प्रदायवाद वेदविहित विवर्जित पै, सासन
विदेसिन को नासन प्रचण्डी ने।
गोरे के अगारी उद्दण्ड मै उठाय दण्ड, चण्ड
है प्रतिज्ञा करी प्रज्ञाचक्षु दण्डी ने॥

हम इस कवित्त का अर्थ करते समय देखें कि कवि ने किस प्रकार दण्डी जी के दिव्य शरीर तथा उनके प्रचण्ड व्यक्तित्व का सारगर्भित उल्लेख थोड़े से शब्दों में कर दिया है। नवनीत चौबे, दंडीजी के शिष्य होने के नाते उनकी शारीरिक विभूति को प्रत्यक्ष देखने वालों में थे। वे कहते हैं- 'उनका ऊंचा ललाट है, शरीर में प्रचण्ड शक्ति है, मुख विशाल है, गले में रुद्राक्ष की माला तथा मस्तक पर चंदन का त्रिपुण्ड है।' पाठक ध्यान रखें, दंडीजी कोई आर्यसमाजी संन्यासी नहीं थे। परम्परागत साधुओं की भांति वे रुद्राक्ष मालाएं धारण करते थे तथा शैव संन्यासियों की भांति मस्तक पर शैव सम्प्रदाय के अभीष्ट त्रिपुण्ड नामक तिलक भी धारण करते थे। स्वामी दयानन्द ने भी पर्याप्त समय तक रुद्राक्ष की मालाएं धारण की थी। यह तो हुआ दंडीजी का ब्राह्यरूप। आगे कवि कहता है-'दंडीजी का वज्र सदृश वाणी वैष्णवादि प्रतिपक्षी सम्प्रदायों पर उसी प्रकार प्रहार करती थी जिस प्रकार देवराज इंद्र का वज्र पक्षधारी पर्वतों पर प्रहार करता है। दण्डीजी ने वेद विवर्जित सम्प्रदायवाद को नष्ट करने के लिए घोर प्रयास किया। इसी प्रकार उन्होंने विदेशी शासन को नष्ट करने तथा उद्दण्ड गोरों का नाश करने के लिए अपने हाथ में दण्ड तो धारण किया ही, प्रचण्ड प्रतिज्ञा भी की।'

निश्चय ही उक्त काव्य में किंचत अतिशयोक्ति है। दंडीजी ने विदेशी शासन को नष्ट करने के लिए कोई प्रत्यक्ष उपाय न किये हों, परंतु अपने प्रिय शिष्य दयानन्द में उन्होंने स्वतंत्रता की लौ अवश्य जगाई जो कालांतर में उद्दीप्त होकर प्रचण्ड अग्नि बन गई। जीवन चरित लेखनों का यह अनुमान ठीक है कि एकांत के क्षणों में जब विरजानंद और दयानन्द का वार्तालाप होता था तो उसमें सम्प्रदायवाद के विरुद्ध संघर्ष करने, अनार्षग्रंथों का उन्मूलन करने, मूर्तिपूजादि कदाचारों का विरोध करने जैसी बातों के साथ-साथ विदेशी शासन को कैसे समाप्त किया जाये, जैसे सूत्र भी सम्मिलित रहे होंगे। परंतु इसके लिए कोई लिखित प्रमाण नहीं है। इन गुरु-शिष्यों के संवाद के समय कोई अन्य व्यक्ति उपस्थित भी तो नहीं रहता था।

स्वामी दयानन्द के आगे के दस वर्ष धर्म-प्रचार तथा वेद-विरुद्ध मतवाद के खंडन को ही समर्पित रहे। वे हरिद्वार कुम्भ के मेले में जाते हैं। पाखंड-खंडनी पताका लहराते हैं। तत्पश्चात् गंगा के तटवर्ती प्रदेश का भ्रमण करते हुए संध्या, गायत्री, अग्निहोत्र आदि सामान्य वेदोक्त धर्म पर आचरण करने का उपदेश देते हैं। फर्रुखाबाद, कानपुर, काशी आदि नगरों में पौराणिक विद्वानों से मूर्तिपूजा की वैदिकता पर शास्त्रार्थ भी करते हैं। अब तक उनमें जो विचार चल रहे हैं वे यही हैं कि किसी न किसी प्रकार से मूर्तिपूजादि अवैदिक अनुष्ठानों का चलन बंद हो तथा लोग वेद प्रतिपादित वर्णाश्रम धर्म का पालन करें। दयानन्द की यह चेष्टा रही कि इस महत्वपूर्ण कार्य में स्वामी विशुद्धानन्द जैसे आयु तथा अनुभव में उनसे भी वरिष्ठ संन्यासी उनका सहयोग करें। किंतु मठों में रहकर लौकिक सुखों को भोगने वाले विशुद्धानन्दादि संन्यासियों को दयानन्द का यह कार्यक्रम भला कैसे स्वीकार होता?

जब स्वामी दयानन्द भारत की तत्कालीन राजधानी कलकत्ता में आये तो 1872 का दिसम्बर मास था। राजधानी में धर्मसुधार, शिक्षा, कुरीति निवारण तथा समाजोन्नति के अनेक कार्यक्रम जारी हो चुके थे और बंगाल के सार्वजनिक जीवन में महर्षि देवेन्द्र नाथ ठाकुर, केशवचंद्र सेन, रामकृष्ण परमहंस, ईश्वरचंद्र विद्यासागर तथा भूदेव मुखोपाध्याय आदि अनेक लोग कार्यरत थे। दयानन्द सरस्वती प्रथम तो दूरस्थ गुजरात देश के थे, फिर बंगदेश में वे अपने विचार सरल संस्कृत में ही व्यक्त करते थे। अभी तक उनका हिंदी पर पर्याप्त अधिकार नहीं हो पाया था, तथापि उन्होंने बंगाल के इन सुधी नेताओं से व्यक्तिगत सम्पर्क किया और देश की दशा को सुधारने के लिए सम्मिलित प्रयास किये जाने पर बल दिया।

Who was the Founder of Arya Samaj

Article By by Sathya Narayanan

Arya Samaj was founded by Swami Dayanand Saraswati in Bombay in the year 1875. While endorsing the supremacy and authority of the Vedas, the Samaj waged a stiff battle against idol worship and superstitions and social evils such as child marriage and sati and promoted women education and widow remarriage.

The far reaching effects of the Arya Samaj succeeded in reforming Hinduism, eradicating social evils and superstitions, and establishing some highly remarkable educational and social institutions for the evolution of human consciousness. While other reform movements like Brahmo Samaj admitted the influence of the western education, Arya Samaj drew its inspiration purely from the Vedas and the rich cultural heritage of India.

A patriot and a revolutionary Sanyasin combined in him, Swami Dayanand Saraswati was born in the Morvi state of the then Saurashtra (present Gujarat) to a wealthy orthodox Brahmin couple named Karshanji Lalji Tiwari and Amrithbai. Being the Tahsildhar of Tankara, Karshanji assured a highly affluent life to Moolashankar (the original name of Dayanand Saraswati).

Moolashankar grew as a highly knowledgeable and inquisitive boy.

Wealth and comfort did not allure him. He was deeply moved by the death of his sister and his maternal uncle whom he loved and revered the most. The grief he suffered turned him away from home to seek the truth of his life.

Once on a Shivratri day, Moolashankar observed rats moving on the idol of Lord Shiva and questioned the power of the idol. He started preaching the elders gathered that they were wrongly worshipping an insentient stone instead of seeking the true Shiva inside our being. He left the home in search of a Guru. Moolashankar became Swami Dayananda Saraswati under the able guidance and tutelage of Swami Purnananda.

Dayanand once again wandered in the Himalayas in search of the right Guru. Neither difficulties nor attractions deterred his journey. After 15 years of search, he was guided to approach Virajananda in a hermitage in Mathura on the banks of the Narmada River. The master asked about his scholarship. When Dayanand said he had learnt Kaumudi Saraswata, the Guru ordered him that he will be accepted only after throwing those useless books.

Dayanand faithfully obeyed the master and proved as a diligent and devoted student. Virajanand moulded him to perfection with his awesome knowledge and Dayanand was ordered by the Guru to go out and spread the knowledge he has acquired to reform the masses. Dayanand reclined several offers to sponsor his trip to the west and chose to educate his countrymen.

OO

ओ३म् है जीवन हमारा

ओ३म् है जीवन हमारा ओ३म् प्राणाधार है।
ओ३म् है कर्ता विधाता ओ३म् पालन हार है।।

ओ३म् है दुःख का विनाशक ओ३म् सर्वानन्द है।
ओ३म् है बल तेजधारी ओ३म् करुणाकन्द है।।

ओ३म् सबका पूज्य है हम ओ३म् का पूजन करें।
ओ३म् ही के ध्यान से हम शुद्ध अपना मन करें।।

ओ३म् के गुरुमन्त्र जपने से रहेगा शुद्ध मन।
बुद्धि दिन प्रतिदिन बढ़ेगी धर्म में होगी लगन।।

ओ३म् के जप से हमारा ज्ञान बढ़ता जाएगा।
अन्त में प्रिय ओ३म् हमको मोक्ष-पद पहुँचायेगा।।

➲ नंद किशोर आर्य

दयावान-प्रभो

दया से परिपूर्ण तू ही दयावन्त है
असीम तेरी कृपा, तू स्वयं अनन्त है
पुष्पों की पंखुड़ियों में तेरी सुगन्ध है
सितारों की दुनिया में तेरे प्रबंध है
तेरा प्रकाश फैले तो मिलता आनन्द है
दया से परिपूर्ण तू ही दयावन्त है॥

युग के काव्य का अनवरत छंद है
हवाओं में तेरे स्पर्श का अनुपम स्पंद है
फूलों में छुपा हुआ तेरा मकरन्द है
दया से परिपूर्ण तू ही दयावन्त है

अद्भुत तेरी ऋतुएँ जैसे बसन्त है
तेरे ज्ञान पथ पर संत और महन्त हैं
तेरे ज्ञान से परिपूर्ण कितने ग्रन्थ हैं
दया से परिपूर्ण तू ही दयावन्त है

➲ विजय गुप्त 'आशु कवि'

शत्-शत् नमन

ऐ दयानन्द तुम्हें मेरा शत्-शत् नमन
तुमने ही भर दिया खुशियों से चमन।
हम ऋणी हैं तुम्हारे सदा के लिए
तुमने वैदिक दिया ये जो चिन्तन मनन्।

ऐ दयानन्द तुम्हारी तो क्या बात है
जैसे अमृत की कोई ये बरसात है।
तुम ही तो तुम ही हो तुमसा कोई नहीं
तुमने दे दी है ये ज्ञान सौगात है।

दुख में, दर्द में डूबी विधवाओं को
दीनों को और अनाथों को अस्पृश्य को।
ऐ दयानन्द तुम्हीं ने सहारा दिया
आग में जल रहीं जिन्दा अबलाओं को।

आई दीपावली सब तमस हर लिया
हर हृदय में गुरु ज्ञान दीपक जला।
आप तो चल दिये बिष का प्याला पिये
विश्व को वेद अमृत का सागर दिया।

ऐ दयानन्द तुम्हें मेरा शत्-शत् नमन!!

➲ आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार

दुग्धपान केवल आंखों का धोखा मात्र था

सुरेंद्र कुमार रैली
अध्यक्ष, पाखंड और अंधविश्वास उन्मूलन समिति, दिल्ली

दुग्धपान की अफवाह के फैलते ही राष्ट्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी संचार परिषद ने एक वैज्ञानिक दल का गठन किया और अपने खोजी अध्ययनों के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि इस पूरे प्रकरण में चमत्कार जैसी कोई बात नहीं है। बल्कि यह कुछ वैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुसार हुआ। जब दूध को 90 अंश के झुकाव पर मूर्ति के संपर्क में लाया गया तो मूर्ति ने दूध नहीं पिया, लेकिन इसके विपरीत चम्मच का झुकाव होने पर दूधपान करते हुए प्रतीत हुआ। वैज्ञानिक दल ने अपनी व्याख्या में कहा कि वास्तव में प्रत्येक द्रव का अपना 'पृष्ठ तनाव' (Surface Tension) होता है, जो कि द्रव के भीतर अणुओं के आपसी आकर्षण बल पर निर्भर करता है और इसका आकर्षण बल उस ओर भी होता है जिस पदार्थ के यह संपर्क में आता है। यहां पर भी ऐसा ही हुआ। जैसे ही दूध संगमरमर की मूर्तियों के संपर्क में आया, वह तुरंत मूर्तियों की सतह पर विसरित हो गया, जिससे अंध श्रद्धालुओं को लगा कि चम्मच से अचानक मूर्ति ने दूध खींच लिया है, जबकि दूध की पतली सी धार नीचे से निकलती रही जिस पर ज्यादातर लोगों का ध्यान नहीं गया, क्योंकि संगमरमर और दूध का रंग एक जैसा ही था। जब दूध में रोली मिलाकर यह प्रयोग दोहराया गया तो रंगीन धार स्पष्ट नीचे जाती हुई दिखायी दी। इस प्रकार यह स्पष्ट हो गया कि इस तथाकथित चमत्कार में कोई वास्तविकता नहीं थी, बल्कि यह वैज्ञानिक नियम के अनुसार सामान्य सी प्रक्रिया थी जिसे लोगों ने चमत्कार समझ लिया।

भारत के वरिष्ठ वैज्ञानिक प्रोफेसर यशपाल का कहना है कि गणेश को छोड़ मैं किसी भी अन्य मूर्तियों या पत्थर के टुकड़ों को दूध पिला सकता हूं और दूध ही क्यों ये मूर्तियां पानी भी पी सकती हैं। वास्तव में ऐसा पानी या दूध के पृष्ठ तनाव और कैपलरी प्रभाव के कारण होता है। पानी या दूध का यह कमाल भी प्रकृति की अन्य अनेक विशेषताओं में से एक है। कुछ लोगों का यह कहना है कि आज जब हम मूर्तियों और पत्थर के टुकड़ों को दूध पिलाते हैं तो उसमें से कुछ गिरता दिखायी देता है, लेकिन उस दिन ऐसा नहीं लगता था। प्रो. यशपाल बताते हैं कि वस्तुत: देखने की प्रक्रिया में आंखों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण भूमिका दिमाग की होती है। इसी कारण दृष्टि भ्रम भी होता है। उस दिन हर व्यक्ति के दिमाग में यह बात घर कर गयी थी कि गणेश जी की मूर्ति या पत्थर को दूध पिलाने का प्रदर्शन मात्र किया जा रहा है। सच्चाई यह है कि दूध उस दिन भी गिर रहा था और आज भी गिर रहा है। फर्क केवल नजरिये का है।

'विद्या दान सबसे बड़ा दान है'

आर्ष गुरुकुल, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा "आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रबंध समिति पं." द्वारा संचालित वैदिक शिक्षा का उत्कृष्ट केंद्र, आर्य समाज बी-69, सेक्टर-33, नोएडा में स्थापित पिछले 25 वर्षों से ब्रह्मचारियों को विद्वान बना रहा है। जो आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में सहयोग कर रहे हैं। इस समय 100 ब्रह्मचारी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आर्ष गुरुकुल के प्रधानाचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार के नेतृत्व में दिन-रात चौगुनी उन्नति की ओर अग्रसर गुरुकुल को सहयोग देकर 'विद्या दान सबसे बड़ा दान है' में सहयोगी बनें। संस्था में निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था है। कृपया उदार हृदय से आप सहयोग 'यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया', नोएडा सेक्टर-33 में खाता संख्या A/C No. 1483010112345, IFSC- UTB10SCN560 में भेजकर सूचित करें ताकि आपको पावती (रसीद) भेजी जा सके। 'आर्ष गुरुकुल को दी जाने वाली राशि आयकर की धारा 80जी के अंतर्गत कर मुक्त है।' धन्यवाद!

(आर्य कै. अशोक गुलाटी)
प्रबंध संपादक, 'विश्ववारा संस्कृति', मो. : 9871798221, 7011279734

महर्षि स्वामी दयानन्द की दृढ़ता

लाहौर के अंदर महर्षि दयानन्द जी के व्याख्यान चल रहे थे। वह एक बार एक शिव मंदिर में ठहरे। उसमें अच्छी लंबी-चौड़ी जगह देखकर महर्षि दयानन्द जी के शिष्यों ने मंदिर के पुजारी से कहा कि स्वामी जी के व्याख्यान यहीं हो जाए तो अच्छा है।

पुजारी जी प्रसन्न होकर बोले कि बहुत अच्छा रहेगा। मैं स्वामी जी के लिए ठहरने की उचित व्यवस्था किए देता हूं। सारी व्यवस्था हो गई। स्वामी जी ने वहीं भोजन किया और रात्रि को व्याख्यान हुआ, जिसमें लगभग 20,000 लोग उपस्थित थे। स्वामी जी ने उस दिन अपने व्याख्यान में मूर्ति पूजा का जोरदार खंडन किया। मंदिर में रहने वाले साधु और पुजारी सभी दंग रह गए।

सोचने लगे कि यह तो बहुत विचित्र साधु है। हमने इसकी भरपूर सेवा की और यह तो हम पर ही कुल्हाड़ी चला रहा है। सब मंदिर वाले नाराज हो गए और फैसला कर लिया कि कल से इस साधु के व्याख्यान यहां नहीं होने देंगे। उस दिन स्वामी जी के व्याख्यान में मुसलमान भी थे। वे मूर्ति पूजा के खंडन को सुनकर बहुत प्रसन्न हो रहे थे।

अगले दिन जब पुजारी ने मना कर दिया तो स्वामी जी के शिष्य जगह तलाश करने लगे। तभी एक मुसलमान वहां आया और बोला कि आज का व्याख्यान हमारे यहां करवाओ और स्वामी जी के ठहरने की पूरी व्यवस्था मैं कर देता हूं। सबने उसकी बात को स्वीकार करके स्वामी जी की अनुमति ले ली।

रात को जब व्याख्यान हुआ तो लगभग 30,000 लोग इकट्ठे थे। उस दिन वहां मुसलमानों की संख्या बहुत अधिक थी। स्वामी जी ने अपने व्याख्यान में कुरान की पोल खोलनी शुरू कर दी और मुसलमानों को पूरी तरह नंगा कर दिया। मुसलमानों के कान खड़े हो गए। वे कहने लगे कि इसे कुरान की धज्जियां उड़ाने को तो हमने नहीं बुलाया। हमने तो बहुदेवतावाद और पत्थर पूजा पर बोलने को बुलाया था। परंतु यह तो बिल्कुल उल्टा हो रहा है। इसे रोको और व्याख्यान बंद कराओ। परंतु स्वामी जी को रोके कौन, बिल्ली के गले में घंटी कौन बांधे?

स्वामी जी का व्याख्यान चलता रहा और पूरे 3 घंटे तक चला। जनता चुपचाप बैठी थी। एक भी आदमी हिला नहीं। स्वामी जी ने अपनी वाणी को विराम दिया और मंच से उतरे तो वही आदमी जो स्वामी जी को अपने यहां लाया था और सारी व्यवस्था की थी। वह हाथ जोड़कर बोला कि स्वामी जी मुझे तो आपने कहीं का भी नहीं छोड़ा। सब मुसलमान मुझसे नाराज हैं कि यह किसको बुला ले आया?

उस समय स्वामी जी के पास हजारों की भीड़ थी। स्वामी जी के दर्शन के लिए लोग खड़े थे। वह सब भी इस प्रतीक्षा में थे कि स्वामी जी इस मुसलमान की बात का क्या उत्तर देते हैं? स्वामी जी ने कहा कि भाई तुम्हें मेरे व्याख्यान का कोई कष्ट नहीं होना चाहिए। मैं जिसका अन्न खाता हूं तो उसके बदले में उसका हित अवश्य करता हूं। कल मैंने मंदिर वालों का अन्न खाया तो उनको सच्चा रास्ता दिखा कर उनका उपकार करना आवश्यक था और आज आपका अन्न खाया तो आपको सच्चा रास्ता दिखाना आवश्यक था।

मैंने कुछ गलत कहा हो तो बताओ? स्वामी जी का उत्तर सुनकर सब लोग चुपचाप चले गए। 'यह थी स्वामी जी की दृढ़ता और सत्यता। वे सत्य से कभी डिगे नहीं। ऐसे थे हमारे सत्य के प्रबल समर्थक और पाखंड संहारक महर्षि दयानंद। सत्य से अवगत और वेदों से परिचित कराने वाले उन महान युग प्रवर्तक को बारम्बार नमन है।' ○○

महर्षि दयानन्द जी के शिष्यों ने मंदिर के पुजारी से कहा कि स्वामी जी के व्याख्यान यहीं हो जाए तो अच्छा है। पुजारी जी प्रसन्न होकर बोले कि बहुत अच्छा रहेगा। मैं स्वामी जी के लिए ठहरने की उचित व्यवस्था किए देता हूं। सारी व्यवस्था हो गई। स्वामी जी ने वहीं भोजन किया और रात्रि को व्याख्यान हुआ, जिसमें लगभग 20,000 लोग उपस्थित थे। स्वामी जी ने उस दिन अपने व्याख्यान में मूर्ति पूजा का जोरदार खंडन किया। मंदिर में रहने वाले साधु और पुजारी सभी दंग रह गए। सोचने लगे कि यह तो बहुत विचित्र साधु है। हमने इसकी भरपूर सेवा की और यह तो हम पर ही कुल्हाड़ी चला रहा है। सब मंदिर वाले नाराज हो गए और फैसला कर लिया कि कल से इस साधु के व्याख्यान यहां नहीं होने देंगे। उस दिन स्वामी जी के व्याख्यान में मुसलमान भी थे। वे मूर्ति पूजा के खंडन को सुनकर बहुत प्रसन्न हो रहे थे। अगले दिन जब पुजारी ने मना कर दिया तो स्वामी जी के शिष्य जगह तलाश करने लगे।

समाचार - सूचनाएं

- 1 मार्च 195वां महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव गाजीपुर दयानन्द गोसंवर्धन केंद्र दिल्ली में मनाया जाएगा।
- केंद्रीय आर्य युवक परिषद के तत्वावधान में श्रीमती मीनाक्षी लेखी सांसद के निवास महादेव रोड, आकाशवाणी भवन के पीछे महर्षि जी का 195वां जन्मोत्सव आयोजित किया जाएगा।
- 3 मार्च रक्त साक्षी पंडित लेखराम आर्य बलिदान दिवस।
- 4 मार्च को आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली के तत्वावधान में ऋषि बोधोत्सव एवं शिवरात्रि व विशाल ऋषि मेला रामलीला मैदान नई दिल्ली प्रात: 8.30 से 3 बजे तक मनाया जाएगा। ऋषि जन्मोत्सव व बोधोत्सव टंकारा, राजकोट में 1 से 4 मार्च तक मनाया जाएगा।
- 9-10 मार्च, स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, जिला रोहतक (हरियाणा) में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद एवं आर्य राष्ट्र के शंखनाद 'राजधर्म' पत्रिका के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष में स्वर्ण जयंती समारोह का आयोजन किया जा रहा है।
- दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल द्वारा राष्ट्रीय वेद सम्मेलन का आयोजन 9 से 10 मार्च आर्य समाज मालवीय नगर दिल्ली में किया जा रहा है।
- 19 मार्च पं गुरुदत्त विद्यार्थी पुण्यतिथि। 23 मार्च अमर शहीद भगत सिंह, अमर शहीद शिवराम हरि राजगुरु, अमर शहीद सुखदेव थापर बलिदान दिवस।
- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्य होली मंगल मिलन समारोह, 20 मार्च 2019 को रघुमल आर्य कन्या सी. सै. स्कूल, राजा बाजार नई दिल्ली 3 से 7 बजे तक।
- पुलवामा में पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवादियों द्वारा सीआरपीएफ पर हुए हमले के विरोध में तिरंगा रैली आर्यसमाज, आर्ष गुरुकुल की ओर से निकाली गई। जिसमें पदाधिकारी, वानप्रस्थी, सदस्य, आचार्य व ब्रह्मचारी व नोएडा सेक्टर-33 के निवासियों का सहयोग रहा।
- रविवार 24 फरवरी को आर्यसमाज सेक्टर-33 नोएडा में शहीदों को श्रद्धांजलि प्रदान की गई। शहीद शशिकांत के पिताजी को सम्मानित किया गया।
- कुलाधिपति डॉ. सत्यपाल सिंह जी का पदभार ग्रहण करने पर हार्दिक स्वागत : गुरुकुल कांगड़ी सम-विश्वविद्यालय हरिद्वार की प्रयोजक संस्थाओं-आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के माननीय प्रधान महोदयों की उपस्थिति में कुलाधिपति चयन समिति ने मानव संसाधन विकास राज्यमंत्री डॉ. सत्यपाल सिंह जी को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का माननीय कुलाधिपति निर्वाचित किया। 11 फरवरी 2019 को प्रायोजक सभाओं के प्रधान श्री धर्मपाल जी, मा. रामपाल जी, दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार जी ने उनके आवास पर पहुंचकर माल्यार्पण के साथ उनका स्वागत किया तथा पंजाब सभा के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा एवं महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने फोन पर उन्हें बधाई दी। डॉ. सत्यपाल सिंह जी को तदर्थ बधाई व शुभकामनाएं।

विश्ववारा संस्कृति

- सभी धार्मिक, सामाजिक पत्रों की अपेक्षा अधिक संख्या में प्रकाशित होने वाली पत्रिका।
- वर्ष में 12 अंक प्राप्त करें।
- 'विश्ववारा संस्कृति' का वार्षिक सदस्यता शुल्क 250 रुपया है। और आजीवन सदस्यता शुल्क 2500 रुपया है।
- 'विश्ववारा संस्कृति' का विदेश में वार्षिक सदस्यता शुल्क 3100 रुपया है।
- लेखक अपने विचार, लेख, कविता आदि प्रकाशन सामग्री प्रत्येक मास की 2-4 तारीख तक भेज दिया करें।
- जिस मास से शुल्क भेजेंगे तभी से सदस्यता प्रारम्भ होगी।
- नमूना कॉपी के लिए रु. 20 का धन-आदेश द्वारा अग्रिम भेजें।
- प्रत्येक पत्र व्यवहार में अपनी सदस्यता संख्या अवश्य लिखें और उत्तर चाहने वाले व्यक्ति दोहरा कार्ड या टिकट भेजें।
- प्रत्येक पत्र-व्यवहार में अपना पता भी हिन्दी में साफ-साफ लिखा करें।
- आपके सुझाव अपेक्षित हैं।

■ प्रबंध संपादक

'विश्ववारा संस्कृति' : सदस्यता आवेदन पत्र

नाम : .....

आयु : ..... दिनांक : .....

पता : .....

.....

शहर : ..... राज्य : ..... पिन कोड : .....

फोन : ..... मोबाइल : ..... ई-मेल .....

नगद/चैक/मनी आर्डर/डीडी संख्या : .....

संरक्षक/आजीवन/पंच वर्षीय/वार्षिक सदस्यता हेतु संलग्न है।

चैक-मनी आर्डर 'आर्य समाज' नोएडा के नाम भिजवाएं अथवा आप लोग सीधे ही 'युनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया' नोएडा, सेक्टर-33 में खाता संख्या : 1483010100282, IFSC-UTB10SCN560 में जमा कराकर रसीद की प्रतिलिपि निम्न पते पर भेजें-

प्रबंध संपादक

'विश्ववारा संस्कृति'

आर्य समाज, बी-69, सेक्टर-33, नोएडा, (उप्र)

संपर्क सूत्र : 0120-2505731, 9871798221

ई-मेल : info.aryasamajnoida33@gmail.com

OO

मौसम बदलने के साथ बढ़ता है बीमार होने का चांस

मौसमी उत्तेजित विकार के लक्षण

- निराशाजनक, उदासीनता या भीतर से भारी और उदास महसूस होना।
- असंतुलित नींद का आना
- सर्दियों के दौरान सुस्त और थकान सामान्य दिनचर्या को जीने में बहुत मुश्किल या असंभव सा बना देती है।
- ज्यादा खाने की इच्छा, कार्बोहाइड्रेट और मधुर पेय पदार्थो और भोजन की इच्छा होना इस बीमारी में सामान्य है , जिससे वजन में वृद्धि होती है।
- अपने दैनिक कार्यो में ध्यान केंद्रित ना कर पाना, चिड़चिड़ापन, चिंता, सामाजिक संपर्क से बचना, मूड में हेरफेर होना, बेचैनी होना यह ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई पैदा करता है।

मौसम बदलने के साथ ही हमारे शरीर में भी बदलाव शुरु हो जाता है। मॉनसून ब्लूज़ से ब्रेक के साथ ही शरीर के भीतर विभिन्न बदलाव पैदा करने के लिए सर्दियों की पीड़ा दिखनी शुरू हो जाती है। सबसे आम विकारों में खांसी, सर्दी, फ्लू, जोड़ों के दर्द, थकान और असामान्य भूख शामिल हैं। मौसमी उत्तेजित विकार सर्दियां आने से कुछ दिन पहले शुरू होता है। मानसून और सर्दियों के बीच संक्रमण अवधि के कारण थकान महसूस होती है शरीर कई तरह की बीमारियों से घिर जाता है। अपने स्वास्थ्य मीटर पर जांच रखने और बीमारियों को रोकने के लिए एहतियात बरतेंगे तो इम्यूनिटी मजबूत बनेगी। मौसमी उत्तेजित विकारों पर डॉ. पंकज अग्रवाल, वरिष्ठ होम्योपैथी चिकित्सक का कहना है कि मौसम बदलने के साथ ही खांसी, बुखार, फ्लू जैसी बीमारियां शरीर को जकड़ लेती है जिससे स्वास्थ संबंधी परेशानी होती है और व्यक्ति को अपने कामकाज से भी ब्रेक लेना पड़ता है।

होम्योपैथी सबसे लाभकारी

- **ऑरम मैटालिसम**- मौसमी उत्तेजित विकार के साथ कई विकारों का पता लगाने के लिए यह एक विशेष दवा है। यह डिप्रेशन के उपचार के लिए निर्धारित किया जाता है जो सूर्य के प्रकाश और विटामिन डी की कमी से जुड़ा होता है। यह विशेष रूप से तनाव और दुःख के प्रबंधन में मदद करता है। प्राधिकारी और कर्तव्य की मजबूत समझ वाले लोग ऑरम मैटालिसम के लिए अच्छे उपभोक्ता हैं।
- **इग्नेटिया**- होम्योपैथिक चिकित्सक अक्सर मौसमी उत्तेजित विकार और अन्य प्रकार के अवसाद, भावनात्मक संकट, चिंता, मानसिक बीमारी और दुः ख के लक्षणों के लिए इग्नाटिया की सलाह देते हैं।
- **नेट्रम सलफ्यूरिकम**- यह उपाय विशेष रूप से डिप्रेशन वाले रोगियों के लिए किया जाता है जो नमी के साथ बदतर बढ़ता है। नेट्रम् सल्फ्यूरिकम विशेष रूप से उन लोगों के लिए अनुकूल है जो सूखे और गीले मौसम से मामूली बदलाव के प्रति संवेदनशील है।
- **पल्सातिल्ला**- यह होम्योपैथिक दवा विंड

फ्लावर (एक प्रकार का फूल) से तैयार किया जाता है, जो मस्तिष्क, संवेदनशील व्यक्तित्व वाले जैसे रोगियों की भावनाओं को आसानी से चोट पहुँचाते हैं और जो दूसरों की भावनाओं को चोट पहुंचाने से बचने के लिए स्वयं को विस्तारित करते है, उनके लिए यह सबसे फायदेमंद है। पल्सातिल्ला मौसमी उत्तेजित विकार में उपयोगी होने के साथ, यह चिंता, गठिया, सिरदर्द और हार्मोनल असंतुलन के उपचार में भी उपयोगी है।
- **सेपीया**- यह कटलफिश स्याही से बनाया जाता है व मौसमी उत्तेजित विकार और अन्य प्रकार के अवसाद के लक्षणों के उपचार में सहायक हो सकता है और उन लोगों के लिए विशेष रूप से प्रभावी हो सकता है जो चिड़चिड़े, अभिभूत, थके हुए और जो दूसरों से खुद को अलग करने की प्रवृत्ति रखते हैं।
- मौसमी उत्तेजित विकार मे मुख्य रूप से अवसाद की विशेषता होती है जो मूड और शरीर के परिवर्तनों के कारण हर साल एक ही समय में होती है। यह विटामिन डी और सूर्य के प्रकाश की कम मात्रा के कारण होने पर होती है। कहा जा सकता है कि जब सर्दियों का मौसम शुरू होता है और अपने चरण पर होता है तब इंसान में अराजकता का व्यवहार पैदा होता है। इसमें प्राकृतिक सूर्य के प्रकाश में जितना संभव हो उतना ज्यादा रहने की सलाह दी जाती है। इस अवधि के दौरान, एक मानव अपने शरीर, चेहरे और अपनी जीवन शैली और मनोदशा में बहुत सारे बदलाव देखता है जिससे चिंता और अवसाद हो सकता है।

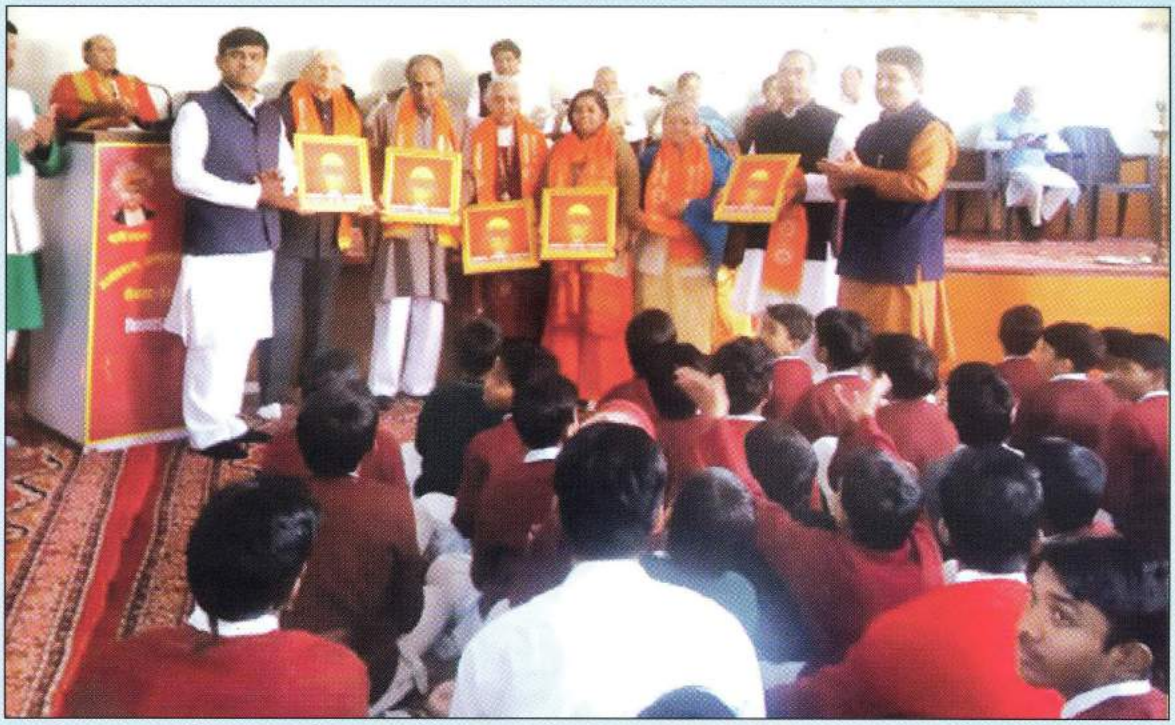

आर्य राष्ट्र निर्माण 'विमर्श समारोह' में पधारे महानुभावों को सम्मानित करते पदाधिकारीगण।

'विश्ववारा संस्कृति' के प्रबंध संपादक आर्य कै. अशोक गुलाटी जी का अभिनंदन करते अखिल भारत हिन्दू सभा के पदाधिकारीगण।

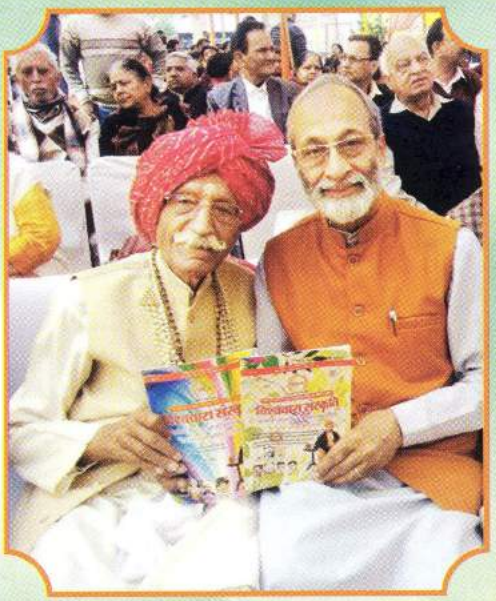

आर्य जगत के भामाशाह MDH के मालिक श्री धर्मपाल जी को 'विश्ववारा संस्कृति' की प्रति भेंट करते आर्य कै. अशोक गुलाटी।

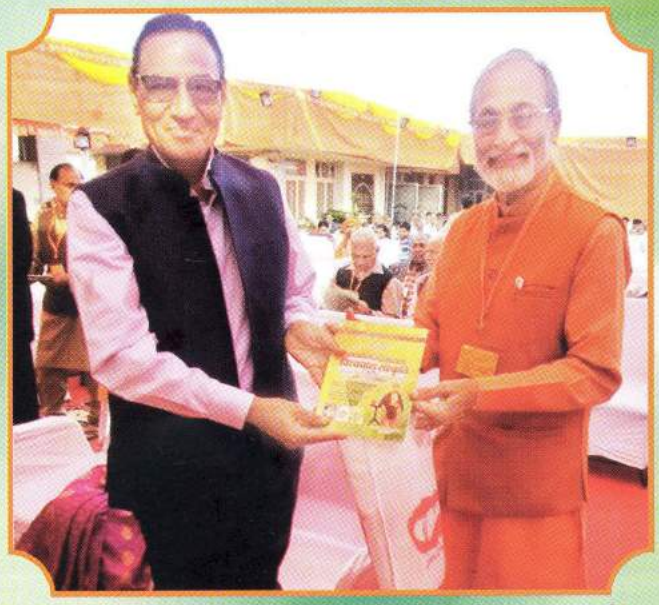

लोकायुक्त राजस्थान श्री सज्जन सिंह कोठारी को 'विश्ववारा संस्कृति' की प्रति भेंट करते हुए आर्य कै. अशोक गुलाटी।

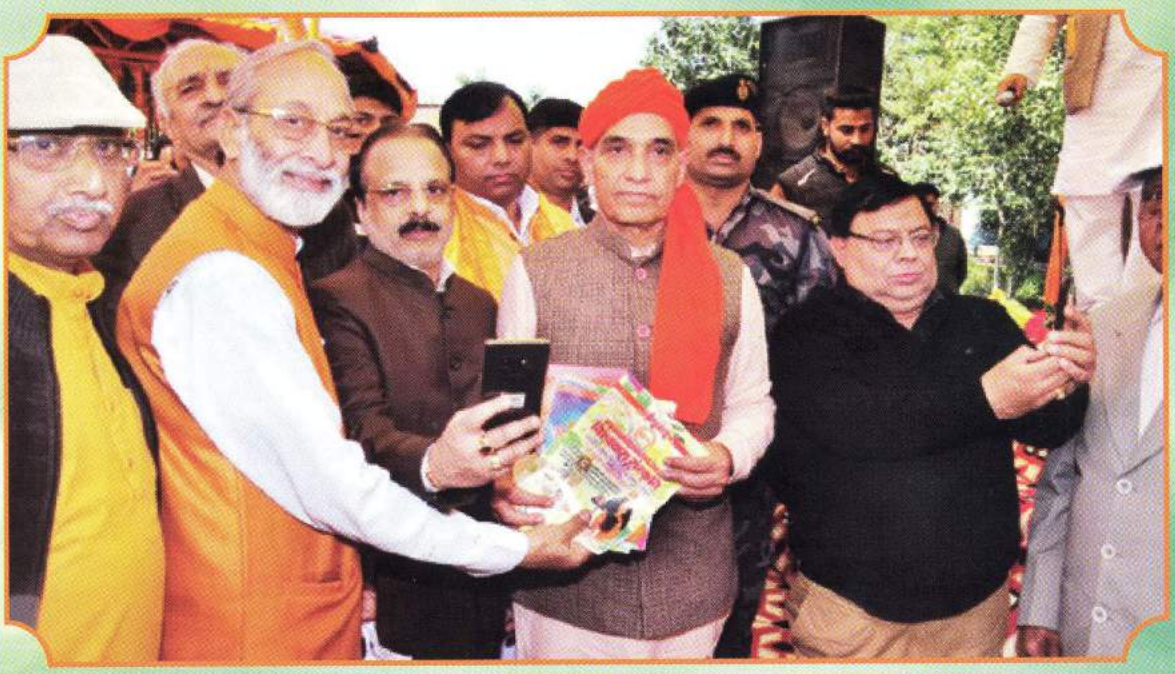

भारत सरकार के मंत्री डॉ. सत्यपाल सिंह को 'विश्ववारा संस्कृति' की प्रतियां भेंट करते हुए आर्य कै. अशोक गुलाटी।

विश्ववारा संस्कृति

आर्य समाज, बी-69, सैक्टर-33, नोएड़ा (उ.प्र.) दूरभाष : 0120-2505731, 9871798221